



अखिल भारतीय तेरापंथ वाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अहंल उवाच

छंदेण पलेतिमा पया।

माया और मोह से ढंका
हुआ प्राणी स्वेच्छा से
विभिन्न गतियों में पर्यटन
करता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 13 • 3 - 9 जनवरी, 2022



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 01-01-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

आचार्यश्री महाश्रमण जी के पदार्पण से गुलाबी नगरी बनी धर्म नगरी

तत्त्ववेत्ता और अध्यात्मवेत्ता आचार्य थे श्रीमद्जयाचार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

बरड़िया कॉलोनी, जयपुर,

२८ दिसंबर, २०२१

जयपुर को पावन बनाने जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य की जन्मस्थली, छठे आचार्य माणकगणी के जन्मस्थान, श्रीमज्जयाचार्य के महाप्रयाण भवन, मिलाप भवन आदि अनेक स्थानों पर पधारे और अपने पूर्वाचार्यों को श्रद्धा स्मरण करते हुए आदर्श नगर स्थित श्रीमज्जयाचार्य के स्मारक स्थल 'साधना के प्रज्ञापीठ' पर पधारे। आचार्यश्री ने श्रीमज्जयाचार्य के स्मारक स्थल का अवलोकन किया। तदुपरांत कुछ क्षण वहाँ आसीन होकर स्मरण कर पास ही बने प्रवचन पंडाल में पधारे।

महातपस्वी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम वाङ्मय में पण्णा शब्द प्रयुक्त किया गया है। पण्णा यानी प्रज्ञा धर्म की समीक्षा करने वाली होती है और तत्त्व का विनिश्चय प्रज्ञा के द्वारा हो सकता है।

प्रज्ञा का विकास जिस व्यक्ति में होता है, वह एक संदर्भ में मानो विशिष्ट व्यक्ति होता है। अभी हम लोग राजस्थान की राजधानी और जैन श्वेतांबर तेरापंथ के अनेक इतिहासों से जुड़ा यह जयपुर शहर है, जहाँ हम प्रवास कर रहे हैं। जयपुर शहर जिसके नाम में जय शब्द है, और हमारे धर्मसंघ के चतुर्थाचार्य के नाम में भी जय है। दो जय का



मिलना हुआ है। जयाचार्य ने जयपुर में अनेक चतुर्मास किए। अंतिम चतुर्मास और अंतिम श्वास का ग्रहण भी जयपुर में हुआ था।

जयाचार्य को प्रज्ञा पुरुष कहा गया है। ऐसा लगता है कि उनके पास ज्ञान का अच्छा खजाना था। कितनी लंबी सूची उनके साहित्य की है। उसमें सिरमोड़ भगवती की जोड़ है। जयपुर से धर्मसंघ के अनेक आचार्यों का इतिहास जुड़ा हुआ है। आचार्यों के जन्म,

दीक्षा, आचार्य पद और महाप्रयाण के प्रसंग जयपुर के साथ जुड़े हुए हैं। जयाचार्य के जीवन प्रसंग फरमाए।

जयाचार्य मुनि हेमराज जी स्वामी के विद्यार्थी थे। जयाचार्य तत्त्ववेत्ता, अध्यात्मवेत्ता और विधि प्रयोग में लेने वाले आचार्य थे। अनेक विशेषताओं के पुंज श्रीमद् जयाचार्य थे। स्थूल भाषा में वे भिक्षु के अवतार थे। दोनों में कितना साम्य था। जयाचार्य से कुछ

अंशों में साम्य रखने वाले आचार्य तुलसी हुए थे। जयाचार्य के महाप्रयाण स्थल सिंघड़ भवन भी गया था। माणकगणी के जन्म स्थान पर भी गया था। जयपुर में प्रवास-भ्रमण हो रहा है।

हमारे में भी तत्त्वज्ञान का चिंतन-मनन का विकास होता रहे। हमारे में भी हमारे पूर्वाचार्यों के गुणों का विकास होता रहे, साधना में आगे बढ़ते रहें। 'जय हो कल्लु

सुत जग में विश्रुत जय महाराज की' गीत का सुमधुर संगान किया। मेरे दीक्षादाता मंत्री मुनिश्री सुमेरमल जी स्वामी से भी जुड़ा यह शहर हो गया। उन्होंने चार बालकों को दीक्षा प्रदान की थी। हमारा सम्यक् विकास होता रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेयुप अध्यक्ष राजेश छाजेड़, स्थानीय सभा मंत्री पन्नालाल पुगलिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि जो संविभाग से दूर रहता है, उसे मोक्ष नहीं मिल सकता।



अपनी आत्मा को अपना परम मित्र बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण



अणुविभा, २६ दिसंबर, २०२१

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अणुविभा के महाप्रज्ञ सभागार में मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में शत्रु भी कोई हो सकता है, मित्र भी कोई

होता है। शत्रु को जब अवसर मिलता है, तो वह नुकसान भी कर सकता है। परंतु निश्चय और व्यवहार ये दो दृष्टियाँ हैं। इन दो दृष्टियों से अनेक बातें सुस्पष्ट हो सकती हैं।

आदमी का कोई शत्रु है, यह बात भी सही लगती है। जो हमारा हितैषी हो, वह हमारा मित्र हो सकता है। यह बात व्यवहार नय की भूमिका पर सम्यक् प्रतीत हो रही है। निश्चय की भूमिका में जाएँ तो हमारी आत्मा ही हमारी मित्र है, आत्मा ही हमारी शत्रु है। शास्त्रकार कहते हैं कि गला काटने वाला एक दुश्मन उतना नुकसान नहीं कर सकता, जितना नुकसान दुरात्मा बनी हुई हमारी आत्मा हमारा नुकसान कर सकती है। हमारी आत्मा हमारे कितने जन्मों को खराब कर सकती है।

यहाँ बड़ा दुश्मन हमारी दुरात्मा ही बन सकती है। जो दुरात्मा इस जीवन में है, वो पाप करता है। जब बुढ़ापा आने पर मृत्यु सामने मँडराने लगती है, तब सोचता है, अब मेरा क्या होगा? मैंने सुना तो है कि नरक गति होती है, पापी आदमी वहाँ जाता

है। मैंने कितने-कितने पाप किए हैं। वह पश्चात्ताप वाला बन जाता है।

यह पश्चात्ताप बाद में क्यों करना पड़े, पहले ही आदमी सोच ले। पूर्वतय कर ले कि अच्छा जीवन जीऊँ। साधु ने चारित्र ग्रहण किया है, पर कुछ ऐसा हो जाए तो परिणाम अवांछनीय हो सकता है। साधु के दोष इतने लग जाते हैं, प्रायश्चित-आलोचना ठीक नहीं होती है, तो वह मोक्ष के स्थान में पहुँचने में लेट हो सकता है।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी की स्मृति सभा

साध्वी पद्मावती जी की स्मृति सभा में पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे धर्मसंघ की एक साध्वीजी, साध्वी पद्मावती जी अनशन ग्रहण करके प्रयाण की दिशा में आगे बढ़ गईं। पूज्यप्रवर ने साध्वी पद्मावती जी का संक्षिप्त परिचय दिया। गुरुदेव तुलसी

के शासन में साध्वी भक्तुजी द्वारा उनकी विवाहित अवस्था में दीक्षा हुई थी। अभी वो गदग में प्रवास कर रही थीं। उनको शासनश्री सम्मान दिया गया था।

१२ दिसंबर से संलेखना शुरू कर २२ दिसंबर को चौविहार संधारा ग्रहण किया था। वयोवृद्धा साध्वी थी। ऐसे अनशन ले लेना खास बात है। इन वर्षों में ऐसे संधारे कई हो गए। मोक्ष में ट्रेन पहुँचने जैसी बात हो गई। ऐसी साध्वी हमारे धर्मसंघ में आई थी। वर्षों तक रही थी और आखिर एक दिन विदा भी हो गई। मैं साध्वी पद्मावती जी की आत्मा के प्रति मंगलकामना करता हूँ।

साध्वीप्रमुखाश्री जी अभी यहाँ विद्यमान नहीं हैं, वो तो उनके बारे में ज्यादा जानती हैं। हम साध्वीश्री के मंगलकामना के रूप में चार लोगस का ध्यान करते हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)



आत्म युद्ध जीतने से सुख की प्राप्ति होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

बरड़िया विला, जयपुर,
२४ दिसंबर, २०२१

अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन पदार्पण से गुलाबी नगरी, जयपुर धर्मनगरी में परिणित हो गई है। जयपुर में ११ दिनों के पावन प्रवास में आचार्यप्रवर जयाचार्य समाधि स्थल, मंत्री मुनि समाधि स्थल सहित अन्य उपनगरों में विचरण कर जयपुर में धर्म ध्यान की गंगा बहाएंगे। मार्ग में जनता को आशीर्वाद एवं मंगलपाठ प्रदान करते हुए तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी आज बरड़िया फार्म हाउस पधारे। आज युवा दिवस भी है। परम पावन ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि आत्मा के साथ युद्ध करो। अपने आप से लड़ो, बाहर के युद्ध से तुम्हें क्या मतलब? आत्मा-आत्मा के साथ युद्ध कर जीतकर सुख की प्राप्ति होती है। लड़ने से कुछ मिल सकता है।

हमारी दुनिया में भी कभी-कभी युद्ध की बात हो जाती है। कितनी हिंसा होने के बाद शांति-समझौता भी होता है। काश! पहले ही शांति-समझौता हो जाता। जहाँ परिग्रह है, वहाँ हिंसा का भी संबंध है। बाहर का युद्ध हिंसा और परिग्रह से जुड़ा हुआ है। शास्त्रकार ने जिस युद्ध के लिए कहा है, वहाँ परिग्रह-हिंसा नहीं।

अपने आपसे कैसे लड़ें? एक प्रसंग से समझाया कि भीतर का युद्ध लड़ें, आत्मा से लड़ें। कषाय आत्मा से लड़ना है, अशुभ योग और मिथ्या दर्शन से लड़ना है। लड़ने में चारित्रात्मा, वीर्य आत्मा, सम्यक् दर्शन आत्मा, ज्ञान और उपयोग आत्मा सहायता कर सकती है। द्रव्य आत्मा तो मूल आत्मा प्रदेशों का पिंड है। कषायों को, राग-द्वेष, हिंसा, घृणा को जीतने का प्रयास करें।

मोहनीय कर्म का उदय भाव हमारा शत्रु



हे, मोहनीय का क्षयोपशम भाव उससे लड़ने वाला है। उसको जीतने का प्रयास करें। आत्म युद्ध जीतने का प्रयास करें। आज पौष कृष्णा पंचमी है। आज के दिन एक बालक ने आत्म-युद्ध के लिए प्रस्थान किया था। आज के दिन गुरुदेव तुलसी ने जीवन के बारहवें वर्ष में मुनि दीक्षा परमपूज्य कालूगणी से स्वीकार की थी। उन्होंने अपनी जन्म-भूमि में ही दीक्षा ग्रहण की। वे लाडलू का हीरा थे। जिसने कालूगणी को एक अपेक्षा से निश्चित बना दिया था।

आचार्य तुलसी बालावस्था में भी कुछ विशिष्टता लिए हुए थे। वे मुनि अवस्था में शिक्षक बन गए थे। बाद में धर्मसंघ के नियंता-अधिशस्ता आचार्य बन गए थे। २२ वर्ष की छोटी वय में संघ के सम्राट बन गए थे। आज के दिन एक भावी आचार्य संघ को

प्राप्त हुआ था। भाग्य-पुण्य का योग और क्षयोपशम हो तो आदमी कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है। जन्म या जन्मों का पुण्य संचित किया हुआ था कि वे इतनी छोटी उम्र में अनुशासित धर्मसंघ के आचार्य बन गए थे। अणुव्रत उनका मानवता के संदर्भ में अवदान था। प्रेक्षाध्यान-जीवन विज्ञान जैसे उपक्रम भी उनके जीवन में शुरू हुए। आचार्य महाप्रज्ञ जैसे उन्हें उत्तराधिकारी प्राप्त हुए। समण श्रेणी भी उनके समय में प्रादुर्भाव हुई। २३ वर्ष की अवस्था में उनका महाप्रयाण हुआ। मंत्री मुनि मगनलाल जी स्वामी कहा करते थे कि हमारे पुजी महाराज २२ वर्ष के हैं।

आचार्यश्री तुलसी एक प्रशिक्षक थे। उन्होंने अपने जीवन काल में आचार्य पद को विसर्जन करके अपने युवाचार्य को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। यह हमारे

आगे बढ़ते रहें, यह काम्य है।

आज बरड़िया परिवार से संबंधित इस स्थान में आना हुआ है। इनके परिवार में अच्छे संस्कार रहे। धार्मिक सेवा करते रहें। सबमें अच्छी चित्त समाधि रहे।

मुनि वर्धमान जी ने न्यारा में पहला चतुर्मास संपन्न कर पूज्यप्रवर के दर्शन किए। मुनि वर्धमान कुमार जी ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि हम अपने गुरु के प्रति भक्ति रखें। श्रद्धा रखें। कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुँचना चाहता है, तो उसके लिए जरूरी है कि उसे कोई मार्गदर्शक उपलब्ध हो। बिना मार्गदर्शक के व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता। हमारा लक्ष्य है, वीतरागता को प्राप्त करना। मार्ग के बिना व्यक्ति मंजिल भटक जाता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में बरड़िया परिवार की ओर से खुशबू जैन, राजेंद्र बरड़िया, राजकुमार बरड़िया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पन्नालाल पुगलिया ने पूज्यप्रवर के कल अनुविभा पधारने की सूचना दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शक्ति का उपयोग स्व-पर कल्याण एवं परोपकार में करें : आचार्यश्री महाश्रमण

चाकसू, २२ दिसंबर, २०२१

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ १३ किलोमीटर का विहार कर चाकसू के मानव पब्लिक स्कूल में पधारे। चाकसू पदार्पण पर ग्रामवासियों की तरफ से भव्य स्वागत किया गया।

मानव के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में शक्ति का बहुत महत्त्व है। कर्मवाद के अनुसार शक्ति का संबंध अंतराय कर्म से होता है। अंतराय कर्म हल्का होने से वीर्य का विकास हो सकता है।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना, सदुपयोग करना। शक्ति होना, अपने आपमें उपलब्धि है। अच्छी बात भी है। मेरी शक्ति दूसरों को दुःख देने में न लगे। मेरी शक्ति स्व-कल्याण और पर-कल्याण में लगे। सज्जन लोग होते हैं, वो परोपकार के लिए होते हैं। मेरी शक्ति उत्थान के लिए है, मैं उसे आध्यात्मिक, धार्मिक विकास में लगाऊँ।

परोपकार से पुण्य का बंध होता है, दूसरों को पीड़ा पहुँचाना पाप का बंध कराने वाला तत्त्व होता है। हाथी कितना स्थूलकाय होता है, पर एक छोटा सा अंकुश हाथी को कंट्रोल में रख लेता है। अंधकार को छोटा सा दीया दूर कर सकता है, पहाड़ को वज्र चूर-चूर कर सकता है। जिसमें तेज है, वो बलवान है।

गुणों से आदमी साधु बनता है। रूप का मूल्य नहीं, योग्यता का महत्त्व है। साधना में ज्ञान का महत्त्व है। सुंदरता से गुणवत्ता का अधिक महत्त्व है। यह एक प्रसंग से समझाया। कपड़ों से ज्यादा ज्ञान का महत्त्व है। एक प्रसंग से यह समझाया। शरीर में सहजता हो, शक्ति हो व स्वास्थ्य ठीक रहता है। चेहरे से ज्यादा महत्त्व शक्ति और आचरणों का है। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि देख तुम्हारा चेहरा सुंदर नहीं है, पर चारित्र और ज्ञान सुंदर रहना चाहिए।

दुर्जन आदमी के पास अगर शक्ति है, तो वो दूसरों को कष्ट पहुँचाने में शक्ति का उपयोग करेगा। सज्जन के पास शक्ति है, तो वह दूसरों की सेवा-रक्षा करता है। हमारे मन में ये बात रहे कि मेरे पास जितनी भी शक्ति है, मैं उसका दुरुपयोग करने से बचूँ और आध्यात्मिक सदुपयोग करने का प्रयास करूँ।

शक्तियाँ अनेक प्रकार की हो सकती हैं। तन की शक्ति, वचन की शक्ति, जनबल की शक्ति हो सकती है। गृहस्थ के पास धन बल की शक्ति हो सकती है। शक्तियों का दुरुपयोग न हो, यह भावना मन में रहे, तो आदमी का जीवन और उसकी आत्मा अच्छी रह सकती है। यह जीवन तो क्या, आगे का जीवन भी अच्छा बनने की संभावना रह सकती है। शक्ति का महत्त्व है। शक्ति का सदुपयोग हो, दुरुपयोग न हो, यह आदमी का मनोभाव रहना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि मानव विद्या संस्थान में आए हैं, यहाँ विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी दिए जाएँ ताकि वे अच्छे मानव बन सकें। चाकसू में जैन संप्रदाय में खूब आध्यात्मिक-धार्मिक भावना रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में जैन समाज की ओर से चौथमल जैन, विनोद कुमार जैन, मानव पी०जी० कॉलेज के डायरेक्टर खोलिया ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अपनी आत्मा को अपना परम मित्र...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुख्य मुनिप्रवर ने अपनी श्रद्धांजलि अभिव्यक्त करते हुए कहा कि हमारा धर्मसंघ गुणों की खान है। इसमें अनेक-अनेक साधु-साध्वियाँ दीक्षित हो साधना करते हैं, जीवन में कुछ निर्माण करके धर्मसंघ को अपनी सेवाएँ देते हैं। इसलिए वे धर्मसंघ के लिए रत्न के रूप में होते हैं। साध्वी पद्मावती जी ऐसी ही साध्वी थी। उन्होंने दीर्घकाल तक अपनी सेवाएँ धर्मसंघ को दी थीं। वे एक कला-कुशल साध्वी थी। स्वाध्याय निरंतर चलता था।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि साध्वी पद्मावती जी साध्वी भक्तुजी के पास दीक्षित हुई थीं। साध्वी भक्तुजी अनुशासनप्रिय साध्वी थी। उन्होंने साध्वी पद्मावती जी को अनेक शिक्षाएँ दीं, कलाएँ सिखाई। उनको आवश्यक करणीय कार्य सिखाए। वे हर कार्य निर्जरा के भाव से करती थीं। वे एक सेवाभावी साध्वी थीं।

जयपुर तेरापंथ युवक परिषद के ५०वें वर्ष के आयोजन पर पूज्यप्रवर ने आशीर्वाचन फरमाए कि तेयुप, जयपुर की स्वर्ण जयंती का प्रसंग है। स्वर्ण एक आकर्षणतम द्रव्य और मूल्यवान होता है। स्वर्ण रूप में बनाने के लिए कुछ प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है। ५० वर्षों में संगठन क्या करता है, यह महत्त्वपूर्ण बात होती है। अनेक बातें तेयुप के सामने आई हैं। क्या करना शेष रह गया है, उसकी समीक्षा हो। २५ मुमुक्षु तैयार कर दें। तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर ने अपने 'स्वर्ण जयंती वर्ष' के संदर्भ में आचार्यश्री के समक्ष गीत का संगान किया। वर्तमान अध्यक्ष राजेश छाजेड़ व पूर्व अध्यक्ष अविनाश नाहर ने भावाभिव्यक्ति देते हुए पचास वर्षों के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। इससे संदर्भित बैनर प्रदर्शनी भी प्रस्तुत की गई। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए संबंधित कार्यकर्ताओं को 'दीक्षा के अमृत महोत्सव' के संदर्भ में मुमुक्षु तैयार करने को उत्प्रेरित किया। साथ ही उपस्थित कार्यकर्ताओं को यदि उनके घर से कोई दीक्षार्थी तैयार हो तो उसे न रोकने का त्याग रूपी संकल्प भी ग्रहण करवाया। अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष पन्नालाल बैद ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। कन्या मंडल, जयपुर व कन्या मंडल सी-स्क्रीम द्वारा पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भी अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। आचार्यश्री के दर्शन-सेवा के लिए देर रात तक श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहा।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि सब जीव जीना चाहते हैं। छोटी-छोटी बातों में व्यक्ति उलझकर दुःखी बन जाता है। जीवन में लैट गो का सिद्धांत अपनाएँ। साध्वी जिनप्रभा जी, साध्वी प्रबुद्धया जी ने भी अपनी भावना रखी। साध्वीवृंद द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई।

जयपुर के उपमहापौर पुनीत कर्णावट, तेयुप गीत, तेयुप अध्यक्ष राजेश छाजेड़, अविनाश नाहर, पन्नालाल बैद, कन्या मंडल, ज्ञानशाला की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के अनशन के प्रति काव्यात्मक उद्गार

अर्हम्

● मुनि अर्हत, मुनि भरत कुमार, मुनि जयदीप ●

शासनश्री पद्मावती जी, अद्भुत साहस दिखाया।
संयम जीवन पर स्वर्णिम, सुंदर कलश चढ़ाया।।१।।

शुभो वीरो का पथ है, जीवन का उत्कृष्ट अथ है।
दृढ़-इच्छा शक्ति द्वारा, यह दुष्कर पथ अपनाया।।१।।

महाराष्ट्र की पावन धरती, पा तुम्हें गौरव वरती।
शाहदा गेलड़ा परिकर को तुमने खूब दिपाया।।२।।

गुरु तुलसी आशीर्वर से, दीक्षा भक्तू जी कर से।
विनय समर्पण के द्वारा, दिल में निजस्थान जमाया।।३।।

भक्तू, नगिना सहगामी, बनकर फिर अग्रगामी।
लंबी-लंबी यात्रा कर, शासन का सुयश बढ़ाया।।४।।

गुरुभक्ति-संयम की शक्ति, देखी अंतर अनुरक्ति।
मुक्ति की युक्ति पाने, अनशन का साज सजाया।।५।।

मयंक ज्यूं शीतल जीवन, मेरू सम अडिग अटल प्रण।
दक्ष सती गवेषणांजी, अनुपम कर्तव्य निभाया।।६।।

भावों की ये श्रेणी बढ़ती, शिखरों पर जाँ चढ़ती।
हे 'गदक' धरा खुशहाली, अनशन का रंग लगाया।।७।।

लय : कैसी फुलवारी फुली---

अर्हम्

● साध्वी मंजुशशा ●

महिमा अणसण री---३
थारी बणगी अजब कहाणी, युग-युग री आ अमर निशाणी
शासनश्री किण स्यूं अगजाणी।।ध्रुव।।

भक्तुजी कर पाई दीक्षा, नगिना जीं स्यूं पाई शिक्षा,
तुलसी गुरुवर करी समीक्षा।। महिमा अणसण---

सहज-सरलता समता भारी, पद्मावती जी हिम्मत धारी,
थारी जावां म्हें बलिहारी।। महिमा---

ढलती वय में शौर्य जगायो, तप स्यूं जीवन ओ चमकायो,
अणसण रो उपवन लहरायो।। महिमा---

किण विध आई आ मजबूती, थे तो छेड्यो रण रजपूती,
चमकी तप स्यूं आत्म विभूती।। महिमा---

तीनुं गुरुवां री किरपा पाई, संघ री गरिमा घणी बढ़ाई।
थारी जागी आ पुण्याई।। महिमा---

थारो अणसण सुण चकरावै, मृत्यु कला सबने सिखलावै,
जगमग जीवन ज्योत जलावै।। महिमा---

गवेषणा जी साझ दिरायो, मेरू मयंक जी साथ निभायो,
दक्ष प्रभा जी अवसर पायो।। महिमा---

भावां री श्रेणी चढ़ती जावै, मंजिल स्वयं निकट चल आवै,
ई दृढ़ता ने शीष झुकावै।। महिमा---

लय : धरती धोरा री---

अर्हम्

● साध्वी मंगलप्रज्ञा ●

जीवन सफल बनाया।
शासनश्री साध्वी पद्मावती अनुपम अवसर पाया।
अनशन धारण कर चेतन मंदिर में दीप जलाया।।

जन्म हुआ सतिवर का सुखकर कुल गेलड़ा प्रमुदित,
शहर शाहदा महाराष्ट्र की भाग्यलता वर विकसित,
वीर बालिका को पाकर परिकर ने भाग्य सराया।।

चढ़ती वय में सतिवर ने स्वीकारी संयम सरणी,
भवसागर से पार उतरने बन गई सुखमय तरणी,
तुलसी गुरुवर चरण शरण, संयम सुरतरु लहराया।।

गुरुकृपा से साध्वी भक्तू नगिना सन्निधि पाई,
देश-प्रदेशों में कर विचरण गण की आब बढ़ाई,
सेवाभावी, सरल स्वभावी सतिवर ने गण महकाया।।

चढ़ते परिणामों से सतिवर ने पचखा संधारा,
चौविहार तप अंतर प्रज्ञा दिखलाया चौथा आरा,
बार-बार बलिहारी जाँ, हृदय कमल हरसाया।।

धन्य-धन्य बड़भागण सतिवर, भैक्षव शासन पाया,
महाश्रमण गुरुवर शासन में नव इतिहास रचाया,
मंगलप्रज्ञा सतियों सह भावों का अर्घ्य चढ़ाया।।

लय : संयममय जीवन हो----

अर्हम्

● साध्वी कनकरेखा ●

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी जीवन धन्य बनायो,
चढ़ते भावां अनशन पचख्यो शासन कुरब बढ़ायो।
भिक्षु शासन की जयकार, बोलो महाश्रमण जयकार।।

खानदेश रो क्षेत्र सुरंगों शहादा साताकारी,
संचेती और गेलड़ा परिवार दोन्यु हैं संस्कारी।
शासनश्री भक्तुजी स्यूं, संयम रत्न थे पायो।।

सहज सरलता जागरूकता सेवा का गुण भारी,
कंचन सम जीवन चमकायो खिल गई संयम क्यारी।
कर्नाटक की गदग धरा पर अनशन दीप जलायो।।

गुरुवर की अनुपम-अनुकंपा अनशन योग मिल्यो है,
गुरु-तुलसी की पुण्य-तिथि पर अंतिम स्वप्न फल्यो है।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है जीवन सूत्र बणायो।।

जाप-ध्यान, स्वाध्याय सुधा की अमृत धार बहाई,
संघ-संघपति पूर्ण समर्पित शासन शान बढ़ाई।
लय गुरुवारी असीम कृपा, नव इतिहास रचायो।।

खाता-पीता संधारो करणों है काम करारो,
नश्वर तन स्यूं मुखड़ो मोड्यो धर्यो ध्यान आत्मा रो।
मन मजबूती देख आपरी, सबरो मन चकरायो।।
(कनक, गुण विनीत, केवल, संवर मन हरसायो)।।

लय : माईने माई---

अर्हम्

● साध्वी गवेषणा, साध्वी मेरुप्रभा, साध्वी मयंकप्रभा, साध्वी दक्षप्रभा ●

अनशन करना सचमुच में है साहस भरी कहानी।
तप वेदी पर शासनश्री ने, प्राणों की दी कुर्बानी।।

गुरु तुलसी के निर्देशन से, भक्तुजी से ली दीक्षा
बत्तीस वर्ष सहवास मिला, जीवन की हुई समीक्षा
व्यक्तित्व निखारा अपना, प्रतिभा सबने पहचानी
तप वेदी---

श्रमशीला अति स्वाध्यायी, कर्मठ व सेवाभावी
दाटिकता कला कुशल है, व्यक्तित्व रहा परभावी
हिम्मत के हाथी पूरे, रजपूती सी मर्दानी
तप वेदी---

बहत्तर वर्ष तक संयम पाला, निर्मल निज साधुचर्या
दिनचर्या निर्मल नियमित, नियमित सारी निश्चर्या
संकल्प और जप आदि, बन गए सहज वरदानी
तप वेदी---

चौविहार दस दिन के तप पर, अनशन का कलश चढ़ाया
गेलड़ा संचेती कुल का गौरव, शासनश्री ने खूब बढ़ाया
सौ-सौ दे साधुवाद हम, कैसी आत्मिक मस्तानी
तप वेदी---

कर्नाटक गदग भूमि पर, परचम का झंडा फहराया
महाश्रमण वरतारै में, दक्षिण में नव इतिहास रचाया।
करे मंगलकामना सहवर्ती, जीवन बने अमर निशानी
तप वेदी---

लय : ए मेरे वतन के----

अर्हम्

● साध्वी चंदनबाला ●

साहस का दिव्य नजारा।
पूर्ण स्वस्थता में क्यों तुमने चौविहार तप धारा।।

ऋजुता मृदुता सहज सरलता है विनम्रता भारी,
साध्वी भक्तू और नगिना के पथ की अनुचारी।
सामंजस्य चेतना अनुपम, जीवन निर्मल सारा।।

भक्तू कर कमलों से दीक्षा, धारी अजब तितिक्षा,
एक ठिकाने में जीवन भर, पाई अद्भुत शिक्षा।
तप जप की हो महाराधिका, फैलाया उजियारा।।

कैसे मन में आई सतिवर, छोड़ा खाना-पीना,
कैसे आई उदासीनता अच्छा लगा न जीना।
क्या भक्तू जी ने तुमको, चुपके से किया इशारा।।

घोर मनोबल साहस हिम्मत की उत्तम सहनाणी,
समता दृढ़ता आत्मशक्ति की हो तुम अजब कहानी।
विजयी बनो लक्ष्य पर अपने, दृढ़ संकल्प तुम्हारा।।

लय : संयममय जीवन---



रूपांतरण श्रु जैनिज़्म शिल्पशाला विषयक आयोजन

नोएडा।

अभातेमम द्वारा निर्देशित नोएडा महिला मंडल द्वारा आयोजित अध्यात्म साधना केंद्र, महारौली में समणी डॉ० मंजुप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में एक दिवसीय शिविर-रूपांतरण श्रु जैनिज़्म शिल्पशाला विषय-कषाय का आयोजन रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ समणीश्री जी द्वारा मंगल मंत्रोच्चारण से हुआ। समणी डॉ० मंजुप्रज्ञा जी ने कषाय को समझाते हुए छोटे-छोटे उदाहरण के माध्यम से जीवन को रूपांतरित करने की कला बताई।

समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने नाइन थेरेपी के बारे में विस्तृत जानकारी दी। नोएडा महिला मंडल की बहनों ने मधुर मंगलाचरण किया। तत्त्वज्ञान/तेरापंथ दर्शन की राष्ट्रीय संयोजिका, दिल्ली एवं यूपी प्रभारी मंजु भूतोड़िया, तेरापंथी सभा, दिल्ली के पूर्वाध्यक्ष गोविंद राम बाफणा मानसरोवर गार्डन के पूर्वाध्यक्ष सुखराज डूंगरवाल ने शुभकामनाएँ दी।

तेमम, नोएडा अध्यक्ष कविता लोढ़ा ने समणीद्वय के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी का स्वागत किया और शिविर का उद्देश्य बताते हुए रूपांतरण श्रु जैनिज़्म कार्यशाला विषय- कषाय के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में के०सी० जैन ने बताया कि किस तरह नमस्कार महामंत्र को रंगों के साथ ध्यान करके हम आभामंडल को प्रभावी बनाकर कषायों से दूर रह सकते हैं। साधना केंद्र की सीईओ मीनू शर्मा ने साधना केंद्र की विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। नोएडा महिला मंडल द्वारा कषाय के लक्षण पर वीडियो द्वारा प्रभावी प्रस्तुति दी।

प्रेक्षा प्रशिक्षक अजय शर्मा द्वारा तंत्रिका तंत्र के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। नेचुरोपैथी के डॉक्टर सैमसंग ने स्वस्थ जीवनशैली के सूत्र बताते हुए शुद्ध खानपान के बारे में बताया।

श्रु महिला मंडल के विविध आयोजन श्रु

विख्यात फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर श्रीवास्तव ने घुटने, कमर व गर्दन की जरूरी योगिक क्रियाओं के बारे में जानकारी दी। महिला मंडल के पदाधिकारियों द्वारा प्रेक्षा प्रशिक्षकों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री दीपिका चोरड़िया ने किया।

कार्यक्रम आयोजन के लिए नोएडा महिला मंडल टीम एवं कार्यक्रम संयोजिका पूर्वाध्यक्ष भारती दुगड़ को साधुवाद दिया। आभार ज्ञापन सहमंत्री प्रेम सेखानी ने किया। शिविर में महिला मंडल की बहनों सहित ४४ जनों की उपस्थिति रही।

स्नेहम प्रोजेक्ट का आयोजन

विजयनगर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्नेहम प्रोजेक्ट का आयोजन चंद्रा ले-आउट स्थित सहाना चैरिटेबल ट्रस्ट परिसर में किया गया। इस अवसर पर मंडल के पूर्व अध्यक्ष कुसुम डांगी, परामर्शक मधु सेठिया, कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया। महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेम भंसाली ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि महिला मंडल का सौभाग्य है कि स्नेहम प्रोजेक्ट के अंतर्गत हमको यह सेवा करने का अवसर मिला।

अभातेमम का यह प्रोजेक्ट हम सबको आप तक स्नेह बाँटने के लिए पहुँचाता है। अभातेमम की पूर्व महामंत्री वीणा बैद ने स्नेहा प्रोजेक्ट के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि हमें समय-समय पर इस तरह के कार्यक्रम करने चाहिए। स्नेहम प्रोजेक्ट विशिष्ट विशेषताओं के साथ जन्मे बच्चों के लिए एक सेतु है, जिससे हम स्पेशल बच्चों को समाज के समानांतर खड़ा कर सकें, उनकी शिक्षा, चिकित्सा समाज में उनका एक नाम स्थापित

कर सके।

इसी शृंखला में कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया ने अपनी भावना व्यक्त की। सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने कन्नड़ भाषा में गीतिका का संगान किया। तेयुप मंत्री विकास बाँटिया ने महिला मंडल के कार्य की सराहना करते हुए अपनी मंगलभावना व्यक्त की। कार्यक्रम में महेंद्र टेबा का पूरा सहयोग रहा। आश्रम के अध्यक्ष नरसिम्हा ने आश्रम को चलाने में सहायता करने वाले सभी व्यक्तियों को धन्यवाद दिया।

स्नेहम प्रोजेक्ट के अंतर्गत महिला मंडल द्वारा ब्रेल बुक्स, ब्लैकेट, डेली यूज की सामग्री तथा फल, नाश्ता आदि वितरित किए गए। इस ट्रस्ट के द्वारा संपूर्ण कर्नाटक में ब्रेल बुक बनाकर भेजी जाती है आश्रम के प्रेसिडेंट ने स्वागत करते हुए कहा कि अभातेमम द्वारा निर्देशित स्नेहम प्रोजेक्ट समाज हितैषी व राष्ट्रहितैषी योजना है।

कन्या मंडल संयोजिका खुशी गांधी, प्रीति टेबा, मुस्कान आदि काफी कन्याओं की कार्यक्रम में सहभागिता रही। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष महिमा पटावरी, मंजु गादिया, कोषाध्यक्ष मंजु भंसाली, सहमंत्री अंजु सेठिया, प्रचार-प्रसार मंत्री किरण बोराणा, ललिता डागा, सुनीता पिंचा, मोनिका आदि काफी संख्या में बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने किया।

आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना

विजयनगर, बैंगलोर।

अभातेमम के महीनीय उपक्रम 'आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना' के अंतर्गत संचालित तत्त्वज्ञान तथा तेरापंथ दर्शन की परीक्षाएँ संपूर्ण भारत वर्ष में १८ एवं २१ दिसंबर को आयोजित हो रही हैं, इसी के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल, विजयनगर सेंटर में १२ भाई-बहनों ने परीक्षा में सहभागिता दर्ज कराई।

साध्वी विज्ञप्रभा जी ने भी विजयनगर सेंटर के अंतर्गत परीक्षा दी। केंद्र व्यवस्थापिका बरखा पुगलिया ने पूरी जिम्मेदारी के साथ इस कार्य को संपादित किया। अभातेमम की पूर्व महामंत्री वीणा बैद ने सेंटर का अवलोकन किया। महिला मंडल के अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने सभी परीक्षार्थियों के प्रति शुभकामनाएँ व्यक्त की। मंत्री सुमित्रा बरड़िया, सहमंत्री अंजु सेठिया, कार्यकारिणी सदस्य मंजु लुनिया, हंसा दुगड़ आदि बहनों का परीक्षा केंद्र व्यवस्था में पूरा सहयोग रहा।

स्नेहम प्रोजेक्ट

कोयंबटूर।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम, कोयंबटूर द्वारा स्नेहम प्रोजेक्ट के अंतर्गत सतगुरु सेवा आश्रम में नेत्रहीन बच्चों को जरूरत का सामान वितरित किया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण द्वारा सहमंत्री ज्योति सुराणा ने की। ललिता बरलोटा ने सर्वप्रथम अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ महिला मंडल, कोयंबटूर के बारे में जानकारी दी।

स्नेहम प्रोजेक्ट की विस्तृत में जानकारी तमिल भाषा में दी और सभी बच्चों को मोटिवेशनल स्पीच द्वारा एनेरजाईस्ड एवं आगे कैसे अपने जीवन में बिना निराश हुए, अपनी कमजोरी को अपनी ताकत समझें एवं बिना किसी फायदे के कार्य करते रहना चाहिए, ऐसा बताया।

कार्यक्रम में गणमान्य अतिथि के रूप में डॉ० कार्तिक (ओर्थोपेडिक सर्जन), आश्रम हेड रामानाथन, सक्षम संस्था: देवा गोविंदराजू उपस्थित थे। अंत में धन्यवाद ज्ञापन मंत्री आरती रांका ने दिया। कार्यक्रम का संयोजन कन्या मंडल संयोजिका ख्याति सेमलानी ने किया।

तत्त्वज्ञान एवं तेरापंथ दर्शन परीक्षा

राजारजेश्वरी नगर।

अभातेमम द्वारा आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत संचालित तत्त्वज्ञान एवं तेरापंथ दर्शन की परीक्षाएँ संपूर्ण भारत वर्ष में प्रथम प्रश्न-पत्र १८ एवं द्वितीय प्रश्न-पत्र आयोजित हुआ जिसके अंतर्गत तेमम राजाराजेश्वरी नगर से ११ बहनों ने फार्म भरे एवं सात बहनों ने परीक्षा में सहभागिता दर्ज कराई व्यवस्थापिका हेमलता सुराणा ने पूरी जिम्मेदारी से इस कार्य को संपादित किया।

उर्मिला सुराणा निरीक्षक के रूप में उपस्थित रही। तेमम अध्यक्ष लता बाफना ने सभी को शुभकामनाएँ दी। उपाध्यक्ष सुमन पटावरी, उपाध्यक्ष शोभा बोथरा, सहमंत्री

मंजु बोथरा, मंत्री सीमा छाजेड़ का सहयोग रहा।

तेरापंथ दर्शन तत्त्वज्ञान परीक्षा का आयोजन

साहूकारपेट-चेन्नई।

अभातेमम के तत्वावधान में तेमम, चेन्नई की आयोजना में तेरापंथ दर्शन तत्त्वज्ञान परीक्षा का आयोजन सभा भवन में हुआ। परीक्षा का शुभारंभ सामुहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने सभी का स्वागत करते हुए सभी परीक्षार्थियों को शुभकामनाएँ दी। संचालन संयोजिका प्रीति डूंगरवाल ने किया। सभी परीक्षार्थियों एवं संयोजिका का धन्यवाद मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। परीक्षा की आयोजना में संयोजिका प्रीति डूंगरवाल एवं मंजु दक का विशेष श्रम रहा।

कुल २८ बहनों ने परीक्षा दी। केंद्र द्वारा नियुक्त प्रशिक्षिका दीपाली सेठिया का परीक्षा के दौरान दोनो दिन विशेष सराहनीय सहयोग रहा। इस दो दिवसीय परीक्षा कार्यक्रम के दौरान भवन के कर्मचारी जीतू का विशेष सहयोग रहा। परीक्षा के दौरान अध्यक्ष पुष्पा हिरण, उपाध्यक्ष अलका खटेड़, मंत्री रीमा सिंघवी, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य माला कातरेला, संरक्षिका कमला गेलड़ा, सहमंत्री कंचन भंडारी, कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर, निवर्तमान अध्यक्षा शांति दुधोड़िया, कार्यसमिति सदस्य राजेश्वरी रांका आदि कार्यकर्ताओं की सहभागिता रही।

नीवी कार्यशाला का आयोजन

अमराईवाड़ी।

अभातेमम निर्देशन में तेमम द्वारा नीवी कार्यशाला का आयोजन शृंखलाबद्ध नीवी अनुष्ठान किया गया। कार्यशाला की शुरुआत उपासिका मंजु गेलड़ा ने नमस्कार महामंत्र से की। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान से मंगलाचरण किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए नीवी से होने वाले लाभ बताए। सभी को नीवी करने की प्रेरणा दी। मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने संचालन किया एवं आभार ज्ञापन ममता कच्छारा ने किया। नीवी के इन दोनो कार्यक्रमों की संयोजिका कोमल हिरण एवं ममता कच्छारा का श्रम सराहनीय रहा।

दोनों के परिश्रम से ही नीवी अनुष्ठान में ४१ भाई-बहनों ने भाग लिया एवं आध्यात्मिक तप के द्वारा कर्मों की निर्जरा की।

◆ आलोचना से नहीं, गलत कार्य से डरो।

— आचार्यश्री महाश्रमण



योगक्षेम

अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2021-23

* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोटिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000



ज्ञानशाला के विविध आयोजन

ज्ञानार्थियों के लिए प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

कांदिवली (मुंबई)।

तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला के बच्चों के लिए प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन एवं तेयुप, कांदिवली द्वारा संचालित प्रेक्षाध्यान स्वास्थ्य केंद्र कांदिवली के इस शिविर में कांदिवली, बोरिवली, मलाड़ एवं गोरेगाँव में संचालित ज्ञानशालाओं के ६५ से अधिक छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ के मार्गदर्शन में सायरा बैद एवं अवनी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के दौरान पारसमल दुगड़, शांतिलाल कोठारी एवं सौरभ जैन द्वारा जैन संस्कार विधि से बच्चों के जन्मदिन का उत्सव भी बनाया गया। कार्यक्रम में श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष ०एल० परमार, कोषाध्यक्ष मोहन डागा, तेयुप, कांदिवली के अध्यक्ष मनीष रांका, सहमंत्री पंकज कच्छरा एवं प्रेक्षाध्यान स्वास्थ्य केंद्र के संयोजक प्रमोद डांगी, गौतम डोसी, प्रतिमा पिंचा, राजेश बैद, अशोक कोठारी आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम

लिलुआ।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में लिलुआ ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया। मंगलाचरण ज्ञानशाला गीत ज्ञानार्थियों द्वारा किया गया। विभिन्न गीतिकाओं और नाटक की प्रस्तुति सराहनीय थी। साध्वी स्वर्णरेखा जी ने ज्ञानशाला के बच्चों को अपना प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री तुलसी के अवदान पर आधारित चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई।

सभा के मुख्य न्यासी अमरचंद बैद, अध्यक्ष मनोज बैद, मंत्री दिनेश सुराणा, उपाध्यक्ष आनंद लुणिया, तेयुप अध्यक्ष विकास पुगलिया एवं अन्य कार्यकारिणी सदस्यगण, प्रशिक्षिकाओं, अभिभावकों, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों और अन्य श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में बच्चों ने सुंदर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य प्रशिक्षिका सुनीता बैद, मंजु बैंगणी और बबीता जैन का विशेष सहयोग रहा।

आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चौरडिया, सह-संयोजक संजय पारख, क्षेत्रीय संयोजिका मंजु घोड़ावत भी कार्यक्रम में उपस्थित थी। सह-संयोजक संजय पारख ने ज्ञानशाला के बारे में अपने विचार व्यक्त किए और कार्यक्रम की सराहना की। तेयुप, लिलुआ द्वारा ज्ञानशाला के बच्चों को उत्साहित करने के लिए पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संयोजन मुख्य प्रशिक्षिका सुनीता बैद ने किया।

अभिनंदन समारोह

नोखा।

बीकानेर चातुर्मास संपन्न कर गुरु आचार्यश्री महाश्रमण जी के दर्शनार्थ विहार करते हुए साध्वी शांताकुमारी जी का नोखा पदार्पण पर तेरापंथ भवन में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में अभिनंदन किया गया।

शासन गौरव ने कहा कि भक्त में शक्ति और भक्ति होनी आवश्यक है। इस भयंकर सर्दी में विहार करके गुरुदर्शन करना भक्ति का परिचायक है, अपनी शुभकामना व्यक्त की।

साध्वी शांता कुमारी जी ने तेरापंथ को विलक्षण धर्मसंघ बताया। उन्होंने कहा—साध्वी राजीमती जी के पवित्र आभामंडल से अद्भुत शक्ति मिलती है।

तेरापंथ सभा मंत्री इंद्रचंद बैद, शासन सेवी डॉ० प्रेमसुख मरोठी, सरोज मरोठी, सुनील बैद, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु बैद ने साध्वियों के मिलन को भक्ति भावना, प्रमोद भावना प्रेरणादायक एवं विशेष बताया।

साध्वी समताश्री जी, साध्वी कल्याण मित्रा जी, साध्वी प्रभातप्रभा जी ने साध्वियों का स्वागत किया। संयम यात्रा सुखद रहे, मंगलभावना व्यक्त की। संचालन साध्वी प्रभातप्रभा जी ने किया।

◆ यदि धार्मिकता की भी प्राथमिकता रहे तो जीवन संतुलित रह सकता है और धन पर धर्म का अंकुश भी रह सकता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि - अमूल्य निधि



प्रतिष्ठान शिलान्यास

गंगाशहर।

मंजु-पीयूष लुणिया के नूतन ऑफिस का शिलान्यास का शुभारंभ जैन संस्कार विधि के द्वारा अभातेयुप संस्कारक कन्हैयालाल बोथरा, पवन छाजेड़, भरत गोलछा और देवेन्द्र कुमार डागा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। इस दौरान तेयुप अध्यक्ष विजेन्द्र छाजेड़ सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

भूमि शिलान्यास

गंगाशहर।

करुणा-दर्शन सेठिया के नूतन गृह हेतु भूमि के शिलान्यास का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक कन्हैयालाल बोथरा, भरत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

तेयुप सहमंत्री भरत गोलछा द्वारा सेठिया परिवार को बधाई प्रेषित की। इस अवसर पर सेठिया परिवार के सदस्य और समाज के गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

शुभ विवाह

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी राजेंद्र कुमार सुखानी की सुपुत्री स्वीटी का शुभ विवाह कोटा निवासी लखपत राज जैन के सुपुत्र त्रिवेश के साथ जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। अभातेयुप संस्कारक रतनलाल छलाणी और भरत गोलछा ने विवाह संस्कार का आयोजन विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार एवं आध्यात्मिक भजनों के संगान के साथ संपन्न करवाया। किशोर मंडल, गंगाशहर से जयंत चौपड़ा सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

इस समारोह के दौरान दोनों परिवारों के सदस्य और समाज के गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

स्नेहंश सेखानी सुपुत्र अनुज सेखानी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक विक्रम दुगड़ एवं आनंद बोथरा ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्र स्थापित कर नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ विधि को संपादित किया। तेयुप अध्यक्ष ललित बेंगवानी ने सेखानी परिवार को मंगलकामनाएं प्रेषित की।

तेयुप की ओर से सेखानी परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक आनंद बोथरा ने किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ उपाध्यक्ष अरविंद संकलेचा, उपाध्यक्ष पंकज धीया एवं सहमंत्री गौतम बरडिया की उपस्थिति रही। सेखानी परिवार की ओर से अनुज सेखानी ने तेयुप एवं संस्कारकों का आभार ज्ञापित किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

भुज।

जैन संस्कार विधि के संस्कारक भरत भाई बाबरिया और तेयुप के अध्यक्ष आशीषभाई बाबरिया ने जप, ध्यान और गीतिका के संगान द्वारा जैन संस्कार विधि से विधि करवाई।

तेयुप मंत्री महेश गांधी ने सबका स्वागत किया। अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष वाडीलाल भाई और मोहनभाई ने तेयुप भुज का आभार व्यक्त किया।

इस विधि में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष हंसमुखभाई मेहता, सहमंत्री सुरेंद्र भाई और तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष भरतभाई, सहमंत्री भाविकभाई, खजांची हेतनभाई तथा तेयुप सदस्य उपस्थित रहे।

पाणिग्रहण संस्कार

सूरत।

नोखा निवासी, गुडगाँव-दिल्ली प्रवासी मेघराज भंसाली के सुपुत्र मनोज कुमार भंसाली का शुभ पाणिग्रहण संस्कार बीकानेर निवासी सूरत प्रवासी शांतिलाल सुराणा की सुपुत्री मधु सुराणा के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा ने मंगल मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधि से संपन्न करवाया।

बडोदरा महिला मंडल उपाध्यक्षा प्रभा देवी मेहनोत, सूरत से झंकार देवी बोथरा, बडोदरा तेयुप मंत्री हितेश मेहनोत ने अपने विचार व्यक्त करते हुए वर-वधू के मंगल भविष्य की मंगलकामना की।

दोनों ही परिवारों ने संस्कारकों व उपस्थित सभी परिजनों का आभार ज्ञापन किया।

प्रतिष्ठान शुभारंभ

हिंदमोटर।

महिमा छाजेड़ सुपुत्री ललित छाजेड़-ललिता छाजेड़ (रासीसर निवासी-रिसड़ा प्रवासी) का प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से अभातेयुप संस्कारक प्रवीण कुमार सिंधी ने पूरे मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

तेयुप के मंत्री पंकज बैद ने छाजेड़ परिवार को बधाई प्रेषित की तथा संस्कारक का आभार ज्ञापन किया। छाजेड़ परिवार की ओर से ललित छाजेड़ एवं घेवरचंद सिपानी ने तेयुप, हिंदमोटर और संस्कारक का आभार ज्ञापन किया। परिषद की ओर से छाजेड़ परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।



आत्मा के आसपास

□ आचार्य तुलसी □

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा



ध्यान से अहं-चेतना टूटती है या पुष्ट होती है?

प्रश्न : श्वास-प्रेक्षा से मानसिक एकाग्रता की बात तो समझ में आती है, पर उससे व्यक्ति की अहं-चेतना, क्रोध, लोभ आदि भी क्षीण होते हैं, यह बात समझ में कम आती है। क्या आप इस संदर्भ में विस्तार से बताने की कृपा करेंगे?

उत्तर : श्वास के साथ हमारे अंतर्भावों का गहरा संबंध है। श्वास उनका मानदंड बनता है। श्वास जितना गहरा होता है, अहंकार, क्रोध और लोभ स्वयं शांत हो जाते हैं। जिस व्यक्ति में अहंकार, क्रोध और लोभ की चेतना प्रबल होती है, उनका श्वास मंद या गहरा नहीं हो सकता। श्वास छोटा आता है, उसके आधार पर यह जाना जा सकता है कि अहं, क्रोध आदि वृत्तियाँ सक्रिय हैं। श्वास हमारे पूरे आंतरिक व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करने वाला तत्त्व है। यह केवल प्राणवायु को भीतर ले जाने और कार्बनडायाक्साइड को बाहर निकालने का ही माध्यम नहीं है, हमारी बहुत सारी शक्तियों को सुलाने और जगाने का भी माध्यम है इसका सही उपयोग हो सके तो ध्यान-संबंधी समस्याएँ सुलझ सकती हैं।

प्रश्न : अभी आपने बताया कि श्वास-प्रेक्षा (ध्यान) करने से अहं, क्रोध आदि वृत्तियों का रूपांतरण हो जाता है या वे समाप्त हो जाती हैं। पर अनुभव यह होता है कि ध्यान और उत्तेजना साथ-साथ चलते हैं। कभी ध्यान न करने वाला व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थिति में शांत रह जाता है और वर्षों से ध्यान-साधना करने वाला वहाँ अपना आपा खो देता है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर : यह तो स्वाभाविक है। ध्यान करने में प्राण-ऊर्जा बढ़ती है तो क्रोध भी बढ़ सकता है। शरीर में जितनी गर्मी होगी, उतना ताप होगा। जितना ताप होगा, उतना क्रोध बढ़ेगा। जितना क्रोध बढ़ेगा, उतनी मात्रा में अन्य वृत्तियाँ भी दूषित होंगी। ध्यान और तपस्या से क्रोध बढ़ सकता है, यदि उनसे प्राप्त ऊर्जा सही दिशा में प्रवाहित न हो।

प्रश्न : ऐसी स्थिति में साधक को क्या करना चाहिए?

उत्तर : उसे स्वाध्याय, सेवा आदि प्रवृत्तियों में अपनी ऊर्जा को खपा देना चाहिए। आहार से ऊर्जा बढ़ती है, आसन करने से वह संतुलित हो जाती है। साधक यदि अपनी ऊर्जा को खपाना नहीं जानता है, उसका सम्यक् उपयोग करना नहीं जानता है तो क्रोध, वासना आदि का आक्रमण उसे झेलना ही पड़ेगा। इसलिए ध्यान करने वाले के लिए श्रम करना जरूरी है। उससे अतिरिक्त ऊर्जा समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार जो व्यक्ति नियमित रूप से काम में व्यस्त रहता है, उसकी ऊर्जा का प्रवाह कभी गलत रास्ते में नहीं जाता। आरामतलब और आलसी व्यक्ति ही इस समस्या से आक्रांत होते हैं। ध्यान के बाद अनुप्रेक्षा, स्वाध्याय आदि ऐसे माध्यम हैं, जो ऊर्जा को खपा सकते हैं। इसलिए प्रेक्षाध्यान का अभ्यासार्थी ध्यान के साथ-साथ अनुप्रेक्षा भी करता है।

भगवान महावीर विशिष्ट ध्यानी थे, विशिष्ट तपस्वी थे। यात्रा उनकी ध्यान-साधना में बाधा थी, फिर भी वे विहार करते थे। क्यों? वे जानते थे कि ध्यान और तपस्या से उनकी ऊर्जा बहुत बढ़ती थी। उसको खपाने के लिए, सही दिशा में नियोजित करने के लिए उन्होंने विहार का रास्ता चुना। मूलतः वे अपनी ऊर्जा को अतींद्रिय चेतना के जागरण में लगाते, प्रिय-अप्रिय भावों से ऊपर उठकर आत्मस्थ बनने में लगाते। इसके बाद भी जो ऊर्जा बची रहती, उसका उपयोग विहार-चर्या में होता।

प्रश्न : ध्यान करने से वृत्तियों में उभार आता है तो फिर ध्यान किया ही क्यों जाए?

उत्तर : वृत्तियों की सफाई के लिए ध्यान करना बहुत जरूरी है। दमित वृत्तियाँ व्यक्ति को किसी भी क्षण उत्पथ में ले जा सकती हैं। इसलिए उन्हें उभारना भी जरूरी है, पर उभारने के साथ संभालने की कला आनी चाहिए। शक्ति का जागरण और उसका सही दिशा में उपयोग संयम को पुष्टि देने वाले हैं। दुर्बल संयम संतुलन नहीं बना सकता। इस दृष्टि से सामने जो खतरा है, उसे देखते हुए ध्यान का प्रयोग किया जाता है और जागरूक साधक उस खतरे को टालकर आगे बढ़ने में सफल हो जाता है।

दीर्घश्वास-प्रेक्षा से शरीर को विश्राम भी मिलता है। दिन-भर का थका हुआ व्यक्ति दस-पंद्रह मिनट ध्यान का प्रयोग कर ताजगी का अनुभव कर लेता है। उसका शरीर और मन दोनों हलके और स्वस्थ हो जाते हैं। इस शारीरिक और मानसिक लाभ के साथ दीर्घश्वास-प्रेक्षा का आध्यात्मिक मूल्य भी बहुत है। आध्यात्मिक आरोहण के लिए वह एक उपयोगी सोपान है। इस पर कदम रखने के बाद चेतना के नए-नए आयामों का उद्घाटन अपने आप होने लगता है। साधक की समूची दौड़-धूप इसीलिए तो है कि उसकी चेतना के आवृत्त रहस्यों का बोध हो। प्रेक्षाध्यान के प्रथम चरण में ही उसका प्रारंभ हो सकता है बशर्ते कि साधक गहरी निष्ठा और दृढ़-संकल्प के साथ प्रयोग करें।

दीर्घश्वास की साधना

एक मिनट में सहज है, सोलह सतरह श्वास।
प्रेक्षा से गति-मंदता, बिना किए अभ्यास।।
प्रारंभिक अभ्यास में, पाँच-सात उच्छ्वास।
दीर्घ-साधना में स्वयं संभव सतत विकास।।
एक मिनट में एक ही, जिस क्षण आए श्वास।
मनस्तोष मिलता प्रचुर, जग जाता विश्वास।।
पूरक-रेचक-प्रक्रिया, कुंभक प्राणायाम।
श्वास-संयमन का नियम, निर्विवाद अभिराम।।
कैसे कर सकते कहो, वे नर प्रेक्षाध्यान?
श्वास-क्रिया अनभिज्ञ जो, होकर भी मतिमान।।
संगीतात्मक श्वास हो, जब गहरा लयबद्ध।
विकसित अंतश्चेतना, स्वयं-स्वयं से बद्ध।।

प्रश्न : श्वास प्राणी की सहज क्रिया है। हर प्राणी अपनी-अपनी विधि से श्वास लेता है। आते-जाते श्वास को देखना ही अगर ध्यान है, तब तो कोई भी व्यक्ति ध्याता बन सकता है। दूसरी ओर ध्यान की प्रक्रिया को काफ़ी जटिल बताया गया है। क्या यह विसंगति नहीं है?

उत्तर : ध्यान की अनेक भूमिकाएँ हैं। कुछ भूमिकाएँ सहज हैं और कुछ जटिल। दीर्घश्वास की प्रक्रिया बहुत सरल है। फिर भी अनेक व्यक्ति साधना के प्रारंभिक अभ्यास-काल में सफल नहीं होते। क्योंकि वे श्वास बहुत छोटा लेते हैं। दीर्घश्वास का उन्हें अभ्यास नहीं होता। उन्हें दीर्घश्वास का सुझाव दिया जाए तो भी क्रम व्यवस्थित नहीं होता। कारण उनके श्वास लेने की गति ही उलटी होती है। सामान्यतः कोई भी व्यक्ति श्वास लेता है तब पेट फूलता है और श्वास छोड़ता है तब पेट खाली होता है। किंतु जिन लोगों को श्वास लेते समय पेट के खालीपन का आभास होता है, उन्हें प्रयत्नपूर्वक क्रम बदलना चाहिए। जिन साधकों के श्वास की गति ठीक होती है, वे सरलता से आगे बढ़ जाते हैं। ध्यान की अग्रिम भूमिकाओं में उपस्थित जटिलता के आधार पर ध्यान को जटिल भी माना जा सकता है। यह सापेक्ष वचन है, इसलिए इसमें विसंगति जैसी कोई बात नहीं है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(४५)

जिसकी करुणा ने दुनिया को नैतिकता की सुधा पिलाई।
मूर्च्छित मानवता को जिसने चेतनता की राह दिखाई।।

मेरे प्राण-सरोवर में भी जिसने अनगिन कमल खिलाए
अनजानी राहों में आ जो मंजिल का विश्वास दिलाए
जिसने जनम दिया देता है अविफल साँसें जो जीवन को
आम खास को बाँट रहा है मुक्त भाव से संजीवन को
वह मानव या देवदूत है कुछ भी अब तक समझ न पाई।।

जन-जन की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर चलता जो
विश्व चेतना का साक्षी हो कल्पवृक्ष बनकर फलता जो
वर्धापन हो जन्मदिवस का सतरंगा उत्सव मनभाया
साँसों की सरगम पर सुंदर मधुर-मधुर संगीत सुनाया
पा पूरा अध्यात्मिक सिंचन मानस की बगिया सरसाई।।

अभिनंदन उस पुण्य पुरुष का जो जग की आँखों का तारा
व्यथा देख मानव की बहती हिमगिरि से गंगा की धारा
दर्शन ज्ञान चरित्र बोधि का जो सबको वरदान दे रहा
मझधारा में तूफानों में साहस से हर नाव खे रहा
सुर नर की क्या बात आज तो देती कुदरत स्वयं बधाई।।

(४६)

पुलक उठा धरती का कण-कण फैला नया उजास।
जागृति का अभियान अनूठा बना रहा इतिहास।।

पलभर का सान्निध्य बदल देता जीवन की धारा
ज्वार नाव बन जाता है मझधार बने किनारा
पतझर की वीरानी में भी मुसकाता मधुमास।।

झेल स्वयं ही कड़ी चुनौती सूरज तम को हरता
मन की कोमल पंखुड़ियों को मधु-पराग से भरता
अँखियों में अंजन किरणों का भरता सदा प्रकाश।।

जिस धरती पर टिक जाते हैं पावन चरण तुम्हारे
बन जाता है पंथ स्वयं बनते पदचिह्न सितारे
बदले नजर नजारा बदले है मन का विश्वास।।

युगधारा को मोड़ देव! दी तुमने नई दिशाएँ
चिरयौवन का राज खोल दो दिव्य प्रेरणा पाएँ
युवा दिवस भर देता सबमें संस्कृति का उल्लास।।

(४७)

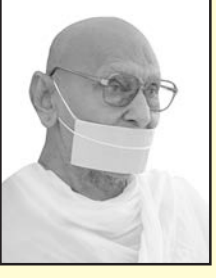
अरुण की हर किरण में है तुम्हारे तेज का दर्शन।
पवन की हर लहर में है तुम्हारे स्नेह का स्पर्शन।।

मधुर मुस्कान में पाया खजाना जगत का सारा
अभिय झरता नयनयुग में हृदय में प्रेम की धारा
विरल व्यक्तित्व बहुरंगा न शब्दों का विषय बनता
तुम्हारे प्रथम दर्शन से हो रही मुग्ध यह जनता
मिले वात्सल्य जो तुमसे मिटे जड़ से परायापन।।

हवाएँ विषबुझी युग की विषमता घोलती मन में
दिखाकर सरणि समता की मुदित करते तुम्हीं क्षण में
निगलती शांति मानव की निरंतर लोभ की ज्वाला
बुझाते समय पर तुम ही पिला संतोष का प्याला
तुम्हारा हर इशारा है प्रगति का ही नया स्पंदन।।

समर्पित आर्य-चरणों में अबोली हृदय की आस्था
बताओ देवते! तुम ही सिद्धि का कौन-सा रास्ता
खिड़कियाँ खोल चिंतन की भरो आलोक जीवन में
दिखाओ करिश्मा जागे क्रांति का भाव जन-जन में
सुपावन पर्व के पल ये दिशाओं में भरी पुलकन।।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

आज्ञावाट

भगवान् प्राह

(४३) आसक्तिं जनयत्याशु, वस्तुभोगो हि देहिनाम्।
जीवनं वस्तुसापेक्षं, समस्या महती ध्रुवम्॥

पदार्थ का भोग आसक्ति उत्पन्न करता है और जीवन पदार्थ-सापेक्ष है, यह महान् समस्या है।

(४४) आसक्तिर्यावती पुंसां, तावान् भावात्मको ज्वरः।
भावात्मको ज्वरो यावान्, तावान् तापो हि मानसः॥

जितनी आसक्ति उतना भावनात्मक तनाव। जितना भावात्मक तनाव, उतना मानसिक तनाव या मानसिक दुःख।

(४५) चैतन्यानुभवो यावान्, अनासक्तिश्च तावती।
यावती स्यादनासक्तिः, तावान् भावः प्रसादयुक्॥

जितनी चेतना की अनुभूति उतनी अनासक्ति, जितनी अनासक्ति उतनी भावात्मक प्रसन्नता।

(४६) यावान् भावप्रसादः स्याद्, तावद् मनो हि निर्मलम्।
नैर्मल्यं मनसो यावद्, तावत् स्याद् सहजं सुखम्॥

जितनी भावनात्मक प्रसन्नता है, उतनी मानसिक निर्मलता है। जितनी मानसिक निर्मलता है, उतना सहज सुख है।

धर्म का तत्त्व सहज, सुगम होते हुए भी जटिल बना हुआ है। इसका कारण है—उसे बुद्धि के द्वारा व्याख्यात किया जाता है, मन और बुद्धि के द्वारा ही सुना जाता है और ग्रहण किया जाता है। यह है अनुभूति द्वारा गम्य या प्रज्ञा के द्वारा ज्ञेय है। बुद्धि स्वयं अस्थिर है—वह विकल्पों को पैदा करती है। धर्म है निर्विकल्प। धर्म को जानने के लिए सब बुद्धि के द्वारा प्रयत्न करते हैं। इसलिए उसका सही समाधान नहीं होता।

मेघ की जिज्ञासा भी इसी की द्योतक है। धर्म क्या है? धर्म की अनिवार्यता क्यों और धर्म का लाभ क्या है?

धर्म क्या है? इसका उत्तर अलग-अलग रूपों में मिलता है। लौकिक धर्म की व्याख्या भिन्न है और अलौकिक-आध्यात्मिक धर्म की परिभाषा अलग है। फिर भी दोनों का सम्मिश्रण हो जाता है। सम्मिश्रण के कारण संशय उत्पन्न होता है। यदि दोनों के बीच का अंतर स्पष्ट हो तो यह भ्रंति नहीं रहती किंतु यह भी कम संभव है। सामान्य लोगों के लिए यह अंतर सहजगम्य होना भी मुश्किल है।

भगवान् महावीर ने धर्म की संक्षेप परिभाषा देते हुए कहा—चैतन्य का अनुभव धर्म है। जिस प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति स्वयं के अस्तित्व का अनुभव कर सके, वह धर्म है। अपना अनुभव, अपना बोध, अपना ज्ञान धर्म है। धर्म का समग्र बल इस पर है कि व्यक्ति अपने को जाने 'मैं कौन हूँ?' इसका प्रथम चरण है—व्रत। व्रत का कार्य है—अपने भीतर आने वाले विजातीय तत्त्व के द्वार को रोकना। जैसे-जैसे विजातीय तत्त्व का द्वार बंद हो जाता है—वैसे-वैसे व्यक्ति अपने निकट पहुँचता चला जाता है। विजातीय तत्त्व का आवागमन इतनी तीव्रता से होता रहता है कि साधारण-असाधारण व्यक्तियों की समझ से परे ही रहता है। आदमी के संस्कार उसे भीतर आने से दूर ही रखता है। वह राग और द्वेष इन दो प्रवृत्तियों में ही उलझा रहता है। चैतन्य के अनुभव में ये दोनों परम बाधक हैं।

व्रत-संयम और तप इन दोनों को नियंत्रित करते हैं। राग का अर्थ है—आसक्ति और द्वेष का अर्थ है—अप्रिय पदार्थों के प्रति घृणा, अरुचि। प्रिय विषयों में रुचि राग है। जीवन पदार्थों से मुक्त नहीं हो सकता है। वह पदार्थ सापेक्ष है। पदार्थों का भोग आसक्ति उत्पन्न करता है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने आसक्ति को और अधिक बद्धमूल करने में अपनी भूमिका निभाई है और निभा रही है। आकर्षक पदार्थों के निर्माण के पीछे व्यक्ति के भीतर छिपे राग-आसक्ति को उत्तेजित करना ही है। नए-नए रूपों में जिस प्रकार पदार्थों की संयोजना हो रही है उसी प्रकार व्यक्ति का मन भी दूषित व प्रलुब्ध हो रहा है। इससे न शांति और न सुख हाथ लगता है। पदार्थों की सामग्री व उनके प्रति आकर्षण से शांति और सुख का कहीं वास्ता नहीं है। पदार्थ-सापेक्ष शांति व सुख का स्थायित्व भी कितना होता है? और उस सुख से मिलने वाला सुख भी कितना होता है? इससे यह स्पष्ट समझा जा सकता है कि शाश्वत, स्थायी सुख का संबंध पदार्थों से नहीं है। नश्वर पदार्थ स्थायी सुख का हेतु भी कैसे बन सकता है? इस अनुभूति ने ही अनासक्ति को जन्म दिया। भगवान् ने इस समस्या के समाधान में कहा कि तुम पदार्थों से निरपेक्ष नहीं हो सकते, किंतु आसक्ति से मुक्त हो सकते हो। पदार्थों के साथ जुड़ना-बंधना या न बंधना यह तुम्हारे हाथ में है। तुम इस कला में पारंगत हो जाओ कि पदार्थों का भोग करते हुए भी उनके साथ लगाव नहीं रखना। दुःख पदार्थों के साथ लगाव का ही है। जितना गहरा लगाव या अटेचमेंट-जुड़ना है उतना ही अधिक तनाव, ताप तथा ऊष्मा है।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनू' □

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-१८ : एक भव में चारित्र की सम्यग् आराधना करने वाले जीव आगे कितने भवों में चारित्र को प्राप्त कर सकते हैं?

उत्तर : सामायिक व छेदोपस्थापनीय चारित्र वाले जघन्य एक भव, उत्कृष्ट आठ भव में इस चारित्र को प्राप्त कर सकते हैं। शेष तीन चारित्र वाले जघन्य एक, उत्कृष्ट तीन भव में इस चारित्र को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न-१९ : एक भव की दृष्टि से जीव कितनी बार चारित्र को प्राप्त कर सकता है?

उत्तर : एक भव की दृष्टि से सभी चारित्र जघन्य एक बार, उत्कृष्ट सामायिक ६००, छेदोपस्थापनीय १२०, परिहार विशुद्धि ३, सूक्ष्म संपराय ४ व यथाख्यात २ बार प्राप्त कर सकता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य आर्यरक्षित



(क्रमशः) दूरदर्शी आर्यरक्षित ने समग्रता से चिंतन कर पठन-पाठन की जटिल व्यवस्था को सरल बनाने हेतु आगम-अध्ययन-क्रम को चार अनुयोगों में विभक्त किया। इस महत्वपूर्ण आगम-वाचना का कार्य द्वादशवर्षीय दुष्काल की परिसमाप्ति के बाद दशपुर में वीर निर्वाण ५६२ (वि०पू० १२२) के आस-पास संपन्न हुआ।

आर्यरक्षित के पास योग-साधक-शिष्यों की प्रभावक मंडली थी। तीन पुष्यमित्र उनके शिष्य थे। दुर्बलिका पुष्यमित्र, घृत पुष्यमित्र एवं वस्त्र पुष्यमित्र। तीनों शिष्य लब्धि-संपन्न शिष्य थे एवं आर्य दुर्बलिका पुष्यमित्र ध्यानयोग के विशिष्ट साधक भी थे।

आर्यरक्षित का प्रमुख विहार-क्षेत्र अवंती, मथुरा एवं दशपुर (मंदसौर) के आसपास का क्षेत्र था। उनके जीवन की विशेष घटनाएँ इन्हीं नगरों से संबंधित हैं।

आर्यरक्षित विविध क्षमताओं से संपन्न थे। वे आगम-ज्ञान के अक्षय कोष थे। आगम-वाचना के लिए अनुयोग व्यवस्था की स्थापना आर्यरक्षित की जैन समाज को विशिष्ट देन है। आवश्यक निर्युक्ति में आर्यरक्षित को देवेन्द्र पूजित एवं अनुयोग-व्यवस्थापक बताया गया है।

समय-संकेत

आर्यरक्षित बाईस वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहे। उनका सामान्य मुनि जीवन चालीस वर्ष का था। संयमी जीवन में कुल तिरपन वर्ष के काल में तेरह वर्ष तक उन्होंने युगप्रधानाचार्य पद का सम्यक् वहन किया। वे पचहत्तर वर्ष की उम्र को पार कर वी०नि० ५६७ (वि० १२७, सन् ७०) में स्वर्गगामी बने।

आचार्य दुर्बलिकापुष्यमित्र

आचार्य दुर्बलिकापुष्यमित्र अनुयोग-व्यवस्थापक आचार्य आर्यरक्षित के विशिष्ट ध्यानयोगी शिष्य थे। उनका जन्म वी०नि० ५५० (वि०सं० ८०) में हुआ। वे वी०नि० ५६७ में संयमी बने।

आर्यरक्षित से नौ पूर्वी का ज्ञान ग्रहण करने में ये सफल हुए। सतत चिंतन-परावर्तन तथा प्रबल ध्यान-साधना में संलग्न रहने से ये काया से अति कृश थे। काय-संस्थान की कृशता से उनका दुर्बलिका नाम भी सार्थक-सा लगता था।

एक बार एक बौद्ध भिक्षु आचार्य आर्यरक्षित के पास आए। प्रसंगवश उन्होंने कहा—जैसे विशिष्ट ध्यान-साधक हमारे संघ में हैं वैसे आपके संघ में नहीं हैं। आर्यरक्षित ने दुर्बलिकापुष्यमित्र को प्रस्तुत करते हुए कहा—इसकी यह कृशता ध्यान-साधना के कारण है।

बौद्ध भिक्षु ने शंका व्यक्त करते हुए कहा—इनकी कृशता का कारण स्निग्धाहार का अभाव है, न कि ध्यान-साधना।

आर्यरक्षित ने उनकी शंका का निरसन करते हुए दो साधुओं को प्रस्तुत किया और बताया—इन दोनों का नाम है घृतपुष्यमित्र और वस्त्रपुष्यमित्र। इन्हें घृतलब्धि और वस्त्रलब्धि सहज प्राप्त है। ये दोनों मुनि समूचे संघ के लिए घृत और वस्त्र की आवश्यकता सहसा पूरी कर सकते हैं। बात को और स्पष्ट करते हुए कहा—मथुरा देश की बिलकुल अनाथ और अति कृपण महिला, जो अपने हाथ से कपास बीन-बीन कर वस्त्र बनाती है और उससे ही अपनी आजीविका चलाती है पर वह कृपण महिला भी श्रमण वस्त्रपुष्यमित्र के उपस्थित होने पर अपने आजीविका के साधन उस वस्त्र को सहर्ष इन्हें प्रदान करते हुए तनिक भी नहीं झिझकती।

वैसे ही अवंती प्रदेश की कृपण गर्भिणी महिला, जो आसन्नप्रसवा हो, पति ने छह महीनों तक याचना करके घृत को इकट्ठा किया हो, पति यदि माँगता है तो उसे वह नहीं देती पर इस घृतपुष्यमित्र के समुपस्थित होते ही वह सारा का सारा घृत इसे सहर्ष देकर पुलकित हो उठती है। ऐसे मुनि जिस संघ में हों वहाँ पौष्टिक भोजन का अभाव रह ही कैसे सकता है?

फिर भी बौद्ध भिक्षु उनकी परीक्षा लेने के लिए अपने साथ ले गए। सरस और पौष्टिक भोजन प्रतिदिन कराते रहने पर भी मुनि का शरीर कृश होता गया। दुर्बलिकापुष्यमित्र के ध्यान-साधना के बल में कुछ भी अंतर नहीं आया। तब भिक्षुओं ने आपकी ध्यान-साधना का लोहा माना।

आर्य दुर्बलिकापुष्यमित्र के जीवन में ज्ञान, दर्शन, चारित्र—ये तीनों पक्ष उजागर थे। उनके अध्यात्म जीवन की सफलता का प्रमुख निमित्त उनकी ध्यान साधना थी। बौद्ध उपासकों को भी आर्य दुर्बलिकापुष्यमित्र की साधना से अंतःतोष प्राप्त हुआ था। जैनशासन की आचार्य परंपरा में आर्य दुर्बलिकापुष्यमित्र विशिष्ट ध्यानयोगी के रूप में विश्रुत हैं।

समय-संकेत—आर्य दुर्बलिकापुष्यमित्र लगभग सत्तरह वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहे। संयम पर्याय के पचास वर्षीय काल में बीस वर्ष तक उन्होंने आचार्य पद के दायित्व का कुशलतापूर्वक वहन किया। विशिष्ट ध्यान-साधना से आत्मा को भावित करते हुए वी०नि० ६१७ (वि०सं० १४७, ई० सन् ६०) में वे स्वर्ग-संपदा के स्वामी बने।

(क्रमशः)



शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के अनशन के प्रति काव्यात्मक उद्गार

अहम्

● साध्वी अणिमाश्री ●

शासनश्री पद्मावती जी की, बलिहारी हम जाएँ।
अनशन का गौरव जाएँ।।

‘लाभंतरे जीविय बूहइत्ता’ आगम वाणी पहचाणी।
‘समयं गोयम मा पमायए’ है प्रभु वाणी कल्याणी।
अनशन-पथ पर कदम बढ़ा, अब शिवरमणी को पाएँ।।

जीवन के समरागण में तुम वीरांगना बन उभरी।
तब फौलादी संकल्पों से ज्योतित आँगन देहरी।
स्वतः प्रेरणा पा अनशन की, लिख दी नई ऋचाएँ।।

हद हिम्मत दिखलाई तुमने, काम किया श्रेयस्कर।
चिर-इच्छित अरमान फला है, आया स्वर्णिम अवसर।
भाव तुम्हारे बढ़ते जाएँ, यही भावना भाएँ।।

सतिवर! आज बताओ तुमने, कैसे हिम्मत कर ली?
खाते-पीते कर संथारा, कैसे झोली भर ली?
दिव्याभाष हुआ क्या तुमको? सतिवर हमें बताएँ।।

गवेषणाजी! तेरे कर में, अनुपम अवसर आया।
विज्ञ-विवेकी सुघड़, सभागी करना काम सुखाया।
मयंक, मेरु दक्षलभाजी कर सेवा उस्ताए।।

‘साध्वी अणिमा’ प्रमुदित मन से तुमको आज मनाए।
कर्णिका, सुधा, समत्व, मैत्री भी, तेरी महिमा गाए।
यही कामना हम सबकी, लय आत्मा से जुड़ जाए।

संघ शिवालय, संघ हिमालय, गण ही है हरिद्वारा।
जिनशासन में तेरापंथ-गण, चमके ज्यों ध्रुवतारा।
ज्योतिचरण प्रभु महाश्रमण को, सविनय शीष झुकाए।।

लय : जहाँ डाल-डाल पर----

अहम्

● साध्वी संपूर्णशशा ●

उद्यान खिल्यो मनभायो।
डाल-डाल और पात-पात पर रंग अनूठो छायो।।

मंजूजी स्यूं दीक्षित शिक्षित विचर्या देश प्रदेशां,
गुरु इंगित आज्ञा रो सतिवर राख्यो ध्यान हमेशा।
नगीनाजी री पावन सन्निधि, जीवन ने महकायो।।

लगी चेतना पौरुष जाग्यो भवसागर स्यूं तरणो,
हर पल हर क्षण रहवै प्रवाहित, शुभ भावां रो झरणो।
ऊर्ध्वारोहण री यात्रा में, अद्भुत शौर्य दिखायो।।

कर्मशत्रु स्यूं लोहो लेवण, सामी छावी मंडस्या,
शूरवीरता रो ओ परिचय, आत्म समर में उखया।
माटी री काया पर पावन, सोने रो कलश चढ़ायो।।

अंत समय तक भैक्षवगण में बहया रहया उपयोगी,
गवेषणा मयंक मेरु दिव्य बण्या सहयोगी।

महाश्रमण रे बरतारे में विजय ध्वज फहरायो।।
महाश्रमणी रो मंगल सायो, अनुपम दीप जलायो।।
उद्यान खिल्यो मनभायो।।

लय : संयममय जीवन हो---

अहम्

● साध्वी प्रबलयशा ●

गुरु ऊर्जा रो रंग खिल्यो, संथारो दीपायो।
अंतर गुलशन महक्यो, संथारो मनभायो।।
मनभायो रे सतीवर मनभायो।
मनभायो रे त्याग मनभायो।
गुरु ऊर्जा रो---।

चौविहार अनशन री महिमा, सगला मिलकर गावै है-३
मृत्यु ने महोत्सव बनायो,
सुर-नर शीश झुकावै है-२
शुद्ध भावां रो अभिनंदन, आत्मा ने चमकायो।।

लंबी उमर, लंबो संयम,
धन्य-धन्य सतीवर जी आप-२
खानदेश री लाइली ने
मैली चादर धोयी साफ-२
शहादा री शान बढ़ी, गणगौरव सुखदायो।।

प्रबल पुण्याई जागी आपरी
तप री सौरभ महकावै-२
मीठी बोली, स्नेह आपरो
भूल्यो कियां है जावै-२
सुयश फैल्यो चिहूँ ओर, गुरुकृपा रो सायो।।

सहयोगी सतियाँ के कहणो
चित्त समाधि देव जोर-२
गदक रो भी भाग्य जाग्यो,
गुरुकृपा स्यूं उजली भोर-२
मुक्ति महल पेढी, चढ़या मन हरषायो।।

अहम्

● साध्वी प्रमिला कुमारी ●

धन्य-धन्य है सतिवर तुमको, मन को जो ऐसे मोड़ा,
बरसे शांत सुधारस झड़ियाँ।
मंजिल अब नहीं है दूर, रख ली दृढ़ता भरपूर,
सुनकर रोमांचित मन कलियाँ।
संथारा! चौविहार किया, संथारा अब तो सीझ गया, संथारा।

जन्म महोत्सव सबके होता, मृत्यु महोत्सव विरलों के होता।
जागी, जागी पुण्याई, आई शुभ घड़ि आई, आखिर कर्मों की टूटी कड़ियाँ।।

सती पद्मावती जी के चरणों में, सुर नर सब मिल शीश झुकाते।
मनोबल गजब था तेरा, आया नूतन सवेरा, पाया रिद्धि-सिद्धियों का दरिया।।

भूख पिपासा मुश्किल है सहना, तुमने विजय का पहना है गहना।
तोड़ी तन की आसक्ति, कर ली सबसे विरक्ति, ओढ़ी चंदा सी उजली चदरिया।।

कुल की शान को तुमने बढ़ाई, कर ली है तुमने शिखर चढ़ाई।
केवल एक ही लगन, हुआ है निज में रमण, पाई भावों से मुक्ति नगरिया।।

महाश्रमण का शासन पाया, जीवन को तुमने सफल बनाया।
यश झंडा फहराया, पौरुष दीप जलाया, सजाया कैसा अनूठा नजरिया।।

लय : तेरे बिन नाहि लागै जिया---

अहम्

● साध्वी जिनप्रभा ●

ऊँची राखी थें भावां री बढ़ती श्रेणी सतिराज।
सीधो चौविहार अनशन ही पचख्यो जबरो कीन्हो काज।।

जिनशासन भैक्षवशासन री महिमा बढ़ी अपार।
महाश्रमण गुरुचरण लगाई जीवन नौका पार।।

जयपुर नगरी स्यूं गुरुवरजी भैजी शक्ति अपार।
महाश्रमणी रो संदेशो, गदग धरा गुलजार।।

भि भाराजमआडाकातुम महाश्रमण सरताज।
‘ॐ भिक्षु-जय तुलसी’ जपतां सर्या वांछित सारा काज।।

साध्वी भक्तू और नगीना रो हो आशीर्वाद।
दृढ़ता और धीरता राखी सौ सौ साधुवाद।।

आत्मयुद्ध में उतर्या मेटण जनम-मरण संताप।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न रो चाल्यो अजपा जाप।।

सौम्य वदन अरु मधुरी वाणी आसी म्हानै याद।
गुरुकुलवासी श्रमणी परिकर रै मन में आह्लाद।।
गुरुकुल में जद भी आता करता म्हारै स्यूं बात।
भगिनी जिनप्रभा नै गौरव बणी ऊजली ख्यात।।

लय : चुरु री चरचा----

अहम्

● शासनश्री साध्वी सोमलता ●

तपसण पद्माश्री जी तपस्या री धूनी रमाई है
शायद स्वर्गलोक स्यूं नगीनांश्री की चिड़ी आई है
जावां बलिहारी म्हे आपरी पचखी अठाई है।।

खानदेश सातां री धरती जटै आपरो जनम हुयो।
सरलमना पदमा ने मायावी दुनिया नहीं भाई है।।

गुरु तुलसी री किरपा स्यूं अनुकूल जोग मिलता रह्या।
शासनश्री भक्तूजी स्यूं दीक्षा री दौलत पाई है।।

लंबी-लंबी यात्रावां में जस रो परचम फहरायो।
मिलनसार पुरुषार्थी बण जीवन बगिया महकाई है।।

जयसिंहपुर में साथ बिताया बै दिन याद आवै है।
सारा रहता हंसता खिलता कली कली विकसाई है।।

हसितमुखी ज्ञानी गवेषणा मेरु कर्मठ मस्तमना।
सेवाभावी सजग मयंक दक्षा सबनें भाई है।।

अब तो आगे ही बढणो है करणी सफल चढ़ाई है।
ढाल सोम शकु संचित जागृत रक्षित मिल गाई है।।

गदग क्षेत्र में आध्यात्मिक उत्सव री चहल पहल लागी।
करुणा सागर महाश्रमण प्रभु किरपा खूब कराई है।।

लय : रोको काया री---

श्री महिला मंडल के विविध आयोजन श्री

रूपांतरण श्रु जैनिज्म कोयंबटूर।

अभातेमम के निर्देशानुसार साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में महिला मंडल, कोयंबटूर के तत्वावधान में मंगलभावना का दूसरा रूपांतरण श्रु जैनिज्म 'ही' संपन्नोहं श्याम एवं रूपांतरण शिल्पशाला 'कषाय' की कार्यशाला रखी गई।

कार्यक्रम की शुरुआत मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई, साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने 'ही' संपन्नोहं श्याम का अर्थ, मैं अनुशासन से लज्जा से संपन्न बनूँ बताया एवं कषायों के चारों बिंदुओं को भी विस्तारपूर्वक समझाया। साथ ही साध्वी राजुलप्रज्ञा जी ने जीवन को सफल बनाने के लिए कषायों का नियंत्रण अपेक्षित है, इसको उदाहरण के माध्यम से समझाया।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री आरती रांका ने किया एवं अंत में धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री ज्योति सुराणा ने दिया। अच्छी संख्या में भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

तत्त्वज्ञान व तेरापंथ दर्शन परीक्षा का आयोजन बालोतरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के तहत तत्त्वज्ञान व तेरापंथ दर्शन परीक्षा का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, बालोतरा के तत्वावधान में बालोतरा न्यू तेरापंथ भवन में किया गया। प्रथम एवं द्वितीय पेपर आयोजित किए गए। इसमें बालोतरा से 99 व अन्य जगह से 3 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी।

परीक्षा केंद्र व्यवस्थापिका विमला गोलेछा ने कार्य को संपादित किया। महिला

मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा ने सभी परीक्षार्थियों को शुभकामनाएँ दी। अभातेमम की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सारिका बागरेचा ने परीक्षा का निरीक्षण एवं अवलोकन किया। बालोतरा के नगर परिषद के चेयरमैन सुमित्रा वैद मेहता की भी उपस्थिति रही।

महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, महाश्रमण तत्त्वज्ञान सेंटर के अध्यक्ष कविता सालेचा ने परीक्षा दी। इस परीक्षा संबंधी व्यवस्था को सफल बनाने में उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, रानी बाफना, सहमंत्री रेखा बालड़, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, पूर्व परामर्शक कमलादेवी ओस्तवाल एवं तेरापंथ सभा के अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की सहभागिता रही।

रूपांतरण श्रु जैनिज्म कार्यशाला

राजाजीनगर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम ने रूपांतरण श्रु जैनिज्म के अंतर्गत 'कषाय' विषय पर कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया। मंगलाचरण में प्रेरणा गीत का संगान मंडल की बहनों द्वारा किया गया। मंडल की अध्यक्ष चेतना वैदमूथा ने मुख्य वक्ता एवं उपस्थित सभी बहनों का स्वागत किया।

उपासक महेंद्र दक ने 'कषाय' को विस्तार से समझाया। उन्होंने सरल भाषा में उदाहरण के साथ क्रोध, मान, माया, लोभ को कैसे कम कर सकते हैं, इसके बारे में बताया। सहमंत्री सुमन वैदमूथा ने संचालन

एवं मंत्री सीमा श्रीश्रीमाल ने आभार ज्ञापन किया। कार्यशाला में परामर्शक, पदाधिकारी, कार्यकारिणी, महिला मंडल के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। सभी बहनों ने कार्यक्रम की सराहना की।

रूपांतरण कार्यशाला मदुरै।

अभातेमम द्वारा निर्देशित रूपांतरण श्रु जैनिज्म शिल्पशाला के अंतर्गत शक्ति स्टेशन पर कषाय विषय पर कार्यशाला का आयोजन तेमम द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत के द्वारा किया गया। तत्पश्चात महिला मंडल की अध्यक्षा नयना पारख ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए कषाय को सरल भाषा में परिभाषित किया। कार्यशाला की मुख्य वक्ता दीप्ति गोलेछा ने कहा कि हम अनेकांत को व्यावहारिक रूप में अपनाकर एवं कषाय का अल्पीकरण कर सुखी परिवार, सुखी समाज, सुखी राष्ट्र एवं सुखी विश्व की कल्पना को साकार कर सकते हैं।

अनेकांत पर कहानी के माध्यम से समझाया एवं कषाय, क्रोध, माया, लोभ को कहानी के माध्यम से अच्छे ढंग से समझाया। प्रेक्षाध्यान, Positivity and personal evaluation के द्वारा हम कषाय को दूर करने का प्रयास कर सकते हैं। कषाय का आत्मा एवं जीवन पर क्या प्रभाव होता है उसकी जानकारी मंत्री दीपिका फूलफगर ने दी। संघर्षिका चंद्रकांता कोठारी ने आने वाले अमृत सिंचन कार्यक्रम की जानकारी प्रदान की। उपाध्यक्ष रेखा दुगड़ ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

स्वागत-अभिनंदन समारोह

नोखा।

उदासर चातुर्मास संपन्न करके पधारें साध्वी कनकरेखा जी का नोखा में शासनश्री साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में स्वागत किया गया।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि लंबे समय के बाद आज मन की इच्छा 'शासन गौरव' के दर्शन कर प्रसन्नता हुई। बहुश्रुत साध्वी राजीमती जी हमारे

धर्मसंघ की निधि है। ध्यान, योग की विरल विभूति है। चेहरे पर ओज और तेज टपकता है।

साध्वी गुणप्रेक्षा जी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी एवं साध्वी विनीतयशा जी ने गीत प्रस्तुत किया।

आगतुक साध्वियों का अभिनंदन साध्वी कुसुमप्रभा जी, साध्वी पुलकितयशा जी, साध्वी प्रभातप्रभा जी ने भी गीतिका

से किया। परिश्रमी, संयमी एवं गुण संपन्न साध्वी बताया।

तेरापंथ सभा मंत्री इंद्रचंद्र वैद 'कवि', लाभचंद्र छाजेड़, गोपाल लुणावत, महिला मंडल अध्यक्षा, मंजु वैद, कुसुम देवी छाजेड़, जयश्री भूरा, पुष्पा देवी पारख ने साध्वियों के परस्पर अहोभाव, प्रमोदभावना पर अभिवंदना व्यक्त की। संचालन साध्वी प्रभातप्रभा जी ने किया।

आचार्यश्री तुलसी दीक्षा दिवस

आर०आर० नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का ६६वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। साध्वीश्री जी द्वारा महामंत्रोच्चार एवं बहनों द्वारा भिक्षु अष्टकम के संगान के पश्चात साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि 99 वर्ष की लघु वय में तेरापंथ के अष्टम अधिशास्ता महामना कालूगणी

के कर-कमलों से अपनी जन्मभूमि में दीक्षित मुनि तुलसी 99 वर्ष के संयम पर्याय में ही गुरुदेव के द्वारा युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किए गए।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा व आशीर्वाद था कि तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक साधु-साध्वी संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी आदि

विविध भाषा के अधिकृत विद्वान बने, रचनाकार बनें। गौरव की बात है कि आचार्यश्री तुलसी के यात्रा ग्रंथों का संपादन साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने किया। साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी, साध्वी चेलनाश्री जी ने आचार्य तुलसी के महान व्यक्तित्व व कर्तृत्व पर विचार रखे।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के प्रति काव्यात्मक उद्गार

अहम्

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

पद्मावती सतिवर जी गावां थारो गीत।

बधावां अनशन ने गया जमारो गीत।

गदग धरा में गूंजसी अब शासनश्री संगीत।।

बोरावड-शाहदा भूमि रा गौरव हो मतिराज।

गढ्यो गजब इतिहास थे, कर्णाटक में ज्यों आज।।

कलाकुशल, स्वाध्यायशील थे विनयशील हो खास।

भत्तूजी रे मुखकमल स्यूं पायो संयम सौल्लास।।

दक्षिण में विचर्या घणा श्री भत्तू नगीनां साथ।

दक्षिण में बन अग्रणी, अब पायो अनशन पाथ।।

बडभागी सति गवेषणा जी, पचखायो संधार,

सुखे सुखे शिखरो चढो थे, पा गुरु कृपा अपार।

पाओ पद निर्वाण शीघ्र थे करूँ कामना एक,

योगक्षेम करणो स्वयं रो जागृत आत्म विवेक।

लय : भाया री---

अहम्

● शासनश्री साध्वी सुप्रभा ●

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी, जबरी हिम्मत धारी।

जबरी हिम्मत धारी, थे काम कर्यो अति भारी।।

जिजीविषा ने छोड़ बढ्या, तपस्या रे पावन पथ पर

मुक्ति महल रो गेलो पकड़यो, चढकर अनशन रथ पर

थाने सौ-सौ साधुवाद है, थारी हिम्मत ने लखदाद है

मन मजबूती स्यूं थे पचख्यो, संधारो इचरजकारी हो।

सहज, सरल हो जीवन थारो, मीठी मधुरी वाणी

मिलनसारिता कार्यकुशलता, लगती घणी सुहाणी

ही अजब गजब समता थारी, नश्वर तन री ममता मारी

वर्धमान भावां री श्रेणी, जीवन नैया तारी हो---

नंदनवन सम भैक्षव शासन पायो किस्मत जागी

महाश्रमण गुरु दृष्टि आराधां, आपां सगलां भागी

साध्वी नगीनांजी थाने गढ्या, बांरी सन्निधि में बढ्या चढ्या

गवेषणा जी, मेरु, मयंक रो योग मिल्यो मनहारी।।

लय : स्वामीजी थारी साधना री---

आध्यात्मिक मिलन समारोह

बैंगलोर।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी का विहार बैंगलोर के बन्नरघट्टा रोड स्थित मीनाक्षी टेंपल कन्हैयालाल खाटेड़ के निवास स्थान पर हुआ। इससे पूर्व साध्वीश्री जी का आध्यात्मिक मिलन चामराजपेट में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी से हुआ। तत्पश्चात साध्वी लावण्यश्री जी का आध्यात्मिक मिलन, जयनगर में हुआ। अनेक श्रावकों की सार-संभाल करते हुए, बैंगलोर के उपनगर में विचरण कर रहे हैं।



तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

कंबल एवं अल्पाहार वितरण

लिलुआ।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य का आयोजन लिलुआ क्षेत्र में स्थित बेलगछिया भांगर में किया गया, जिसमें गरीब लोगों को कंबल एवं अल्पाहार वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में तेयुप, लिलुआ के अध्यक्ष विकास पुगलिया, बेलूर बालि सभा के अध्यक्ष अरुण नाहटा, उपाध्यक्ष अमृत बाफना, मंत्री गौरव घोड़ावत, विकास विनायकिया, अंकुश छाजेड़, अमित जैन, कोषाध्यक्ष अमित लुनिया एवं राकेश सिंधी, लोकेश सिंधी, पंकज नाहटा एवं तेयुप के सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

सेवा की ओर बढ़ते कदम

टी-दासरहल्ली।

तेयुप, टी-दासरहल्ली, अभातेयुप द्वारा निर्देशित त्रिआयामी लक्ष्यों की ओर से सतत गतिमान है। इसी कड़ी में सेवा के क्षेत्र में मानव सेवा को महत्ता प्रदान करते हुए टी-दासरहल्ली द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत नेले नरेंद्र आश्रम लग्गेरे में अनाया बाबेल के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में कंबल वितरण किए।

तेयुप अध्यक्ष कुशल बाबेल ने सभी का स्वागत किया एवं आश्रम के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। सेवा के उपक्रम के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम की नेले नरेंद्र आश्रम के संचालक अभिमन्यु ने प्रशंसा की। परिषद के मंत्री दिलीप पोखरना, संगठन मंत्री देवीलाल गांधी कार्यकारिणी सदस्य अशोक बोहरा एवं पंकज बाबेल उपस्थित रहे। सहयोगी परिवार का आभार दिलीप पोखरना ने व्यक्त किया।

मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन

अमराईवाड़ी।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, अमराईवाड़ी द्वारा मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन तुलसी ज्वेलर्स, नरोडा पर किया गया। तेयुप की पूरी टीम ने इस कैंप को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया। तेयुप के मंत्री हितेश चपलोट ने नवकार मंत्र से कैंप की शुरुआत की। तेयुप अध्यक्ष दिलीप सिसोदिया ने सभी का स्वागत किया।

कैंप में बेजीक बॉडी प्रोफाइल एवं फुल बॉडी प्रोफाइल के दो पैकेज रखे गए। कैंप के शुभेच्छक के रूप में पिस्तादेवी रतनलाल जैन परिवार का पूरा सहयोग मिला। कैंप में बेजीक बॉडी प्रोफाइल के 95 एवं फुल बॉडी प्रोफाइल के 85 सदस्यों ने लाभ लिया।

कैंप को सफल बनाने में एटीडीसी संयोजक कैलाश बाफना एवं मुकेश सिंधवी तथा पूरी एटीडीसी टीम का विशेष श्रम रहा। पधारें हुए सभी लोगों ने एटीडीसी के इस कैंप के कार्य की सराहना की।

इस कैंप में अमराईवाड़ी सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया, मंत्री गणपति हिरण, दिनेश चंडालिया, दिनेश सिंधवी, अशोक सिंधवी, मनोज बाफना, दिनेश टुकलिया, पंकज डांगी, हेमंत पगारिया, विशाल सिंधवी, पंकज बाफना, कैलाश रांका, महावीर बोहरा की विशेष उपस्थिति ने कैंप को सफल बनाया।

कैंप में सोसियल मीडिया टीम के जयेश सिंधवी का विशेष श्रम रहा। समस्त एटीडीसी टीम ने नरेंद्र चोरड़िया परिवार को शॉल-माला से सम्मानित किया।

सेवा कार्य

टी-दासरहल्ली।

तेयुप, टी-दासरहल्ली में अभातेयुप द्वारा निर्देशित सार-संभाल यात्रा सतत गतिमान है। इस दौरान सेवा-संस्कार-संगठन को पुष्ट करते हुए सेवा के क्षेत्र में तोटदगुड्डदहल्ली सरकारी विद्यालय में स्नेक्स का वितरण किया गया। परिषद अध्यक्ष कुशल बाबेल ने अपनी भावाभिव्यक्ति में सभी विद्यार्थियों के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। सेवा के उपक्रम के इस कार्य की विद्यालय प्रधानाध्यापिका ने सराहना की।

इस अवसर पर तेयुप परामर्शक भगवतीलाल मांडोट, तेममं निवर्तमान अध्यक्ष रत्ना मांडोट, इंद्रा कटोटिया, परिषद उपाध्यक्ष कमलेश चावत, मंत्री दिलीप पोखरना, संगठन मंत्री देवीलाल गांधी, सदस्य सुनील गांधी उपस्थित रहे।

स्नेह मिलन का आयोजन

सेलम।

अभातेयुप के निर्देशानुसार परिषद संगठन सार-संभाल साथियों की तेयुप, सेलम के सदस्यों के एक दल का तालावाड़ी वन क्षेत्र में स्नेह मिलन आयोजित हुआ। इस अवसर पर अभातेयुप क्षेत्रीय प्रभारी, तिरुपुर के सोनू डागा का स्वागत अध्यक्ष भारत जैन डूंगरवाल ने किया।

परिषद गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत व कार्यक्रम का संचालन मंत्री गौरव

बोहरा ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष तरुण दाणी रांका ने किया। सोनू डागा ने मासिक पत्रिका 'युवादृष्टि' से अधिक से अधिक सदस्यों को जुड़ने का आग्रह किया।

सार-संभाल के क्रम में अभातेयुप की नवीन योजनाओं से परिषद को आगाह कराया और सदस्यों से सुझावों का संकलन किया। नितेश फूलफगर ने अपने विचार व्यक्त किए। इस ट्रिप का संयोजन संयुक्त रूप से प्रशांत लुंकड़ व अरुण सेठिया ने किया। अशोक चौपड़ा ने व्यवस्था में सहयोग किया।

अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वाचल-कोलकाता।

डॉ० धीरज मरोठी के निर्देशन में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वाचल-कोलकाता में किया गया। कुल 99 व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया।

तेयुप, पूर्वाचल-कोलकाता के अध्यक्ष विकास सिंधी की उपस्थिति से कैंप अत्यंत सफल रहा। डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए विशेष साधुवाद प्रेषित किया।

निःशुल्क डायबिटीज चेकअप कैंप

उधना।

तेयुप, उधना द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर-भेस्तान द्वारा शेट श्री नवीनचंद्र उद्यान, भेस्तान पार्क में निःशुल्क डायबिटीज चेकअप कैंप का आयोजन किया गया।

इस कैंप में कुल 88 लाभार्थियों ने लाभ लिया। आयोजित कैंप में एटीडीसी परिवार के सदस्य निलेश रवारी, आशा पात्रा, अमीया कुमार दास एवं सुदाम बिस्वाल का विशेष सहयोग मिला।

इस कैंप में परिषद के पूर्व अध्यक्ष संजय बोथरा, निवर्तमान अध्यक्ष अरुण चंडालिया, मंत्री गौतम आंचलिया, सहमंत्री भगवतीलाल हिरण, एटीडीसी प्रभारी ललित चंडालिया, किशोर मंडल प्रभारी बसंत बैद, ज्ञानशाला प्रभारी मनोज बाबेल, एटीडीसी टीम से रौनक श्रीश्रीमाल, जिम्मी पितलिया, वैभव डीलियाल ने सहयोग दिया।

बारह व्रत कार्यशाला

लिलुआ।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में तेयुप, लिलुआ (लिलुआ बेलुड़ बाली क्षेत्र) कार्यक्रम हुआ। साध्वीश्री जी ने सहज एवं सरल भाषा में गीतिका के माध्यम से बारह व्रत के बारे में बताया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही।

उपासक संस्कारक आनंद लुनिया ने भी सभी को बारह व्रत के बारे में जानकारी दी।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का शुभारंभ

अमरनगर।

तेरापंथ भवन, अमरनगर में अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप द्वारा आयोजित व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग' कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम संयोजक विकास चौपड़ा ने बताया कि यह कार्यशाला अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा अभ्यर्थियों में व्यक्तित्व विकास, मंच संचालन की बारीकियों, प्रबुद्ध वक्ता बनने के गुण, कैसे भीतर के भय को भगाएँ आदि-आदि विषयों के विकास हेतु संपूर्ण भारत वर्ष में दो लेवल पर आयोजित की जाती हैं।

तेयुप, सरदारपुरा द्वारा इस कार्यकाल की यह प्रथम कार्यशाला जिसका प्रथम लेवल

है, का आयोजन कर इस सत्र में सीपीएस का आगाज किया गया।

सह-संयोजक निर्मल छल्लाणी ने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन दो बैच में कराया जा रहा है, जिसके प्रत्येक बैच में 30 अभ्यर्थियों को 6 दिवस तक अलग-अलग प्रशिक्षकों द्वारा व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण दिया जाएगा। सातवें दिन सभी को मंच पर विषय पर प्रस्तुति देकर प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए जाएंगे।

गौरतलब है तेरापंथ युवक परिषद, सरदारपुरा द्वारा नेत्रदान, रक्तदान, एसडीपी डोनेशन, युवाओं को आपदा प्रबंधन, वैयक्तिक विकास, विहार सेवा आदि के लिए निरंतर रूप से जागरूक कर लोगों को प्रेरित करने का कार्य किया जा रहा है।

रक्तदान शिविर का आयोजन

सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आईसीसी बिल्डिंग, कड़ीवाला स्कूल के पास, सूरत में नमस्कार महामंत्र के सामूहिक मंत्रोच्चार से रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया गया। इस रक्तदान शिविर में सभी ने बहुत ही उत्साह के साथ रक्तदान किया। सभी के सहयोग से कुल 62 यूनिट ब्लड डोनेशन हुआ। आईसीसी बिल्डिंग के बांढिया कंसलटेंसी के चेयरमैन ताराचंद बांढिया और अरविंद भाई का विशेष सहयोग रहा।

तेयुप, सूरत के पदाधिकारियों के साथ एमबीडीडी राष्ट्रीय सह-प्रभारी सौरव पटावरी, एमबीडीडी प्रभारी सतीश संकलेचा, रिशेश घोषल, श्रेयांस सिरौहिया, तेजकरण मांडोट, प्रकाश मेहता, समिति सदस्य निखिल कोठारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। तेयुप, सूरत अध्यक्ष गौतम बाफना ने आगे के कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी एवं सभी को प्रोत्साहित किया।

आईसीसी बिल्डिंग में सभी ने साल में दो से तीन बार ब्लड डोनेशन करने का आश्वासन दिया। अंत में अरविंद एवं सिविल ब्लड बैंक का सेवा हेतु साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

कांदिवली।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप, कांदिवली द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। लायंस क्लब वेस्टर्न मुंबई एवं मरुधर मित्र परिषद के सहयोग के साथ इस शिविर में 88 यूनिट्स का संग्रहण किया गया। इस अवसर पर तेयुप, कांदिवली द्वारा स्थानीय परिवारों एवं साथियों की सार-संभाल कार्यक्रम की भी शुरुआत कांदिवली के लोखंडवाला क्षेत्र में 8 परिवारों से की गई। इस दौरान इन सदस्यों को अभातेयुप एवं स्थानीय परिषद द्वारा किए जाने वाले कार्यों की जानकारी प्रदान करने के साथ ही नए सदस्यों का रजिस्ट्रेशन भी किया गया।

इन कार्यक्रमों में परिषद का मनोबल बढ़ाने हेतु अभातेयुप के राष्ट्रीय सहमंत्री भूपेश कोठारी के साथ ही अभातेयुप की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य जितेंद्र परमार, रवि दोशी, दीपक समदड़िया, अमित एवं मयंक धाकड़ भी उपस्थित थे। कांदिवली महिला मंडल से अलका पटवारी, सभा उपाध्यक्ष चांदमल एवं मुंबई सभा के उपाध्यक्ष विनोद बोहरा ने भी कांदिवली, तेयुप का उत्साहवर्धन किया।

कांदिवली तेयुप एवं उपस्थित अतिथियों द्वारा श्री पार्श्व प्रणति, मैं हूँ सामायिक साधक एवं युवादृष्टि नामांकन अभियान की भी बैनर अनावरण करके शुरुआत की गई। इस पूरे आयोजन का संयोजन तेयुप के कपिल चंडालिया, साहिल कोठारी एवं जयेश छाजेड़ द्वारा किया गया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

सिंधनूर।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के चौथी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप, सिंधनूर ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

मुख्य अतिथि के रूप में वेंकटप्पा नायक डीएसपी सिंधनूर, डॉक्टर हनुमंत रेड्डी चीफ मेडिकल ऑफिसर, सिंधनूर, अभातेयुप के पूर्व महामंत्री हनुमान लुंकड़, डॉ० नागराज काटवा, डॉ० चंद्रशेखर, श्री शक्ति ब्लड बैंक के व्यवस्थापक सोमनगौड़ा बादर्ली, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष के० भीमनगौड़ा ने अपना अमूल्य समय निकालकर अतिथि के रूप में पधारें, सभी ने अपने विचार व्यक्त किए और तेयुप द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए ऐसे ब्लड डोनेशन कैंप और भी होते रहें, इस पर जोर दिया गया।

अध्यक्ष विजय नाहर ने सभी अतिथियों का स्वागत किया, राजेंद्र छल्लाणी ने कार्यक्रम का संचालन किया। ब्लड डोनेशन कैंप के संयोजक के रूप में विककी नाहर ने अपना कर्तव्य निर्वहन किया।

ज्ञान, दर्शन और चारित्र का सम्यक् योग मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है : आचार्यश्री महाश्रमण



पदमपुरा, जयपुर, २३ दिसंबर, २०२१

भगवान महावीर के प्रतिनिधि अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रबल प्रेरणा देने वाले महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी १६ किलोमीटर का विहार कर राजस्थान की राजधानी जयपुर शहर के बाहर पद्म ज्योति नेत्र चिकित्सालय प्रांगण में पधारे। पदमपुरा दिगंबर जैन समाज का तीर्थ स्थल है। तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री

महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अध्यात्म के जगत में ज्ञान का महत्त्व माना गया है। चारित्र का भी महत्त्व है। ज्ञान और चारित्र के बीच में एक और तत्त्व है, वह है दर्शन।

दर्शन शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। दर्शन का एक अर्थ है—देखना। दूसरा अर्थ होता है, दिखाना, तीसरा अर्थ हो सकता है, आँख। आँख का भी शरीर में, जीवन में महत्त्व है। कई लोग नेत्रदान भी करते हैं। आँख का महत्त्व है, इनका हम सदुपयोग

करें, दुरुपयोग न हो। यह एक दृष्टांत से समझाया।

हमारी बाहर की आँखों के साथ भीतर की आँखें भी खुलें। पदमपुरा आना हुआ है। १३ वर्ष पहले भी आना हुआ था। हमारी विवेक वाली आँखें जागृत हों तो अच्छा उपयोग हो सकता है।

दर्शन का चौथा अर्थ है—सामान्य अवबोध। दर्शन का एक अर्थ है—श्रद्धा-आकर्षण और रुचि। दर्शन का एक अर्थ होता है—फिलोसोफी। नदी का एक किनारा है—ज्ञान और दूसरा है—चारित्र। दर्शन दोनों के बीच है सेतू। दर्शन से ज्ञान में श्रद्धा आ जाए तो वो वस्तु आसानी से आ सकती है। विचार और आचार के मध्य सेतू है—संस्कार। संस्कार अच्छे बन जाएँ तो विचार के अनुसार आचार हो सकता है।

जैन दर्शन में कहा गया है कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप मोक्ष का मार्ग है। सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र से मोक्ष मार्ग बनता है। जैसे खीर के लिए दूध, चावल और चीनी आवश्यक है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र का सम्यक् योग बनता है, तो

फिर वह मुक्ति-मार्ग बनता है। जो बहुत महत्त्वपूर्ण है। हम जीवन में कषायों से मुक्त बनें।

दिगंबर-श्वेतांबर जैन शासन की दो धाराएँ हैं। परंतु दिगंबर हो या श्वेतांबर मूल कषाय मुक्त बनना जरूरी है। सफेद कपड़े पहने मात्र से या कपड़े छोड़ देने से मुक्ति नहीं, कषाय मुक्ति ही मुक्ति है। हम अहिंसा यात्रा में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की बात बताते हैं। जैन हो या अजैन सब गुडमेन बनें। आज जयपुर के परिपार्श्व में पहुँचे हैं।

जयपुर और जयाचार्य में मानो नैकट्य है। जयाचार्य की महाप्रयाण भूमि है। जयपुर अनेक आचार्यों से जुड़ा हुआ है। पूज्य माणक गणी की दीक्षा भूमि है। मंत्री मुनि सुमेरमल स्वामी से भी जुड़ा जयपुर क्षेत्र है। हमारे जीवन में ज्ञान, दर्शन, चारित्र का जितना विकास हो सके, इनका योग रहे। पद्मप्रभु का भी स्मरण कर रहे हैं। जयपुर की जनता में सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र का विकास होता रहे, यह मंगलकामना है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में जैन सोशियल ग्रुप से कमल, उपासक श्रेणी की

बहनें, नरेश मेहता एवं परिवार, विनोद जैन, स्थानीय सभा मंत्री पन्नालाल पुगलिया, सुधीर जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावक समाज में आस्था-श्रद्धा है और जागरूक रहते हैं। गुरु दृष्टि को अपनाते हैं। आचार्यप्रवर का अपना फौलादी संकल्प है। आचार्यश्री के स्वागत में पहुँचे जयपुर के सांसद रामचरण बोहरा ने कहा कि आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के स्वागत का अवसर प्राप्त कर मैं अतिशय हर्षित हूँ। आचार्यश्री ने जिस तरह से जयपुर नगरी का बखान किया, उसे सुनकर यहाँ का जनप्रतिनिधि होने का सौभाग्य प्राप्त कर मैं स्वयं को परम सौभाग्यशाली मानता हूँ। अपनी महान यात्रा के साथ आपने इस धरती को आज पावन बनाया है। मैं आपका जयपुर में बारंबार हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ और आशीर्वाद चाहता हूँ कि आपकी कृपा सदैव बनी रहे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

चेतना के द्वारा चेतना को जीतने की साधना विजय पाने की साधना है : आचार्यश्री महाश्रमण

अणुविभा, जयपुर, २५ दिसंबर, २०२१

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी अहिंसा यात्रा व धवल सेना के साथ प्रातः विशाल जनमेदिनी के साथ जयपुर नगर स्थित अणुव्रत विश्व भारती परिसर में पधारे। जैन-अजैन सभी लोग पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदन में पलक-पावड़े बिछाए खड़े थे।

आचार्य तुलसी द्वारा निर्मित, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के पट्टहर ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में जय और पराजय के प्रसंग आते हैं। युद्ध में भी कोई विजय-जय को प्राप्त करता है, तो कोई पराजय का भागीदार भी बन जाता है। चुनाव में भी कोई जीत जाता है, कोई पराजित हो जाता है। कोई कार्य आदमी करता है, उसमें सफलता मिल गई तो मानो विजय मिल गई। असफलता आ जाए तो समझो पराजय हो गई।

जय-पराजय के अनेक प्रसंग हो सकते हैं। शास्त्रकार ने एक विशेष बात बताई है, एक तो होती है, जय, एक होती है—पराजय। परम जय किसे प्राप्त होती है? सूत्रकार ने कहा है, एक आदमी

समरांगण में दस लाख योद्धाओं को भी जीत लेता है, फिर भी वह परमजयी नहीं होता है। वह जय हो सकती है। परम विजय के लिए दस लाख को जीतने की जरूरत नहीं है। लाख, हजार, सौ या दस को जीतने की जरूरत नहीं है, केवल एक को जीत लो तो परमजय हो जाए। वो एक कौन है? एक आत्मा को जो जीत लेता है, अपनी आत्मा को जीत लेता है, वह आदमी परम विजेता बन जाता है। इसे आत्म-युद्ध, धर्मयुद्ध कहा जा सकता है। आत्मा को जीतना मुश्किल है। जीतना है, तो जीतने का तरीका भी आना चाहिए। उसके लिए साधन-सामग्री के रूप में भीतर का बल-सत्त्व होना चाहिए।

आदमी का सत्त्व, प्राणवत्ता, बल, मनोबल, आत्मबल होता है, उससे सफलता मिलती है। अपनी चेतना के द्वारा अपनी चेतना को जीतने की साधना पर विजय पाने की साधना है। साधु एक प्रकार से आत्म-योद्धा होते हैं।

आज हम लोग जयपुर के इस अणुविभा के प्रांगण में आए हैं। परिचित स्थान है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जयपुर पधारना आकस्मिक निर्णय के रूप में हुआ था। अतीत की स्मृतियाँ करवाईं। प्रज्ञा पुरुष

जयाचार्य से जुड़ा यह जयपुर क्षेत्र है। पूज्य माणकगणी से भी जुड़ा क्षेत्र है। आचार्यों से जुड़ा क्षेत्र है। मुनि पुनमचंद जी की लंबे काल तक की तपोभूमि एवं श्रद्धेय मंत्री मुनि सुमेरमल जी का प्रवास स्थल भी जयपुर रहा है।

साध्वी धनश्री जी से आठ चतुर्मास बाद मिलना रहा है। प्रेरणा प्रदान करवाई। जयपुर में खूब धार्मिक चेतना भी बनी रहे। साध्वीप्रमुखाश्री जी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा हॉस्पिटल में मिलने आए थे। ये विशेष बात है। राजनीति के लोग मौके-मौके पर अच्छा दायित्व

निभाते हैं। अच्छी बात है। जयपुर आना हो गया, ये भी अच्छी बात है।

प्रवचन के उपरांत साध्वीप्रमुखाश्री जी की सेवा में लगी साध्वियों ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में गीत का संगान किया। मुनि उदित कुमार जी, मुनि अनंत कुमार जी व मुनि पुलकित कुमार जी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। साध्वी धनश्री जी आदि साध्वियों ने गीत के माध्यम से पूज्य चरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नरेश नाहटा, तेयुप के मंत्री सुरेंद्र नाहटा, टीपीएफ के संदीप जैन आदि ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

तेममं, शहर और तेरापंथ महिला मंडल सी-स्क्रीम ने अपने-अपने गीतों का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

आचार्यश्री के दर्शनार्थ उपस्थित पूर्व डीजी राजीव दासौत ने कहा कि आज बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे आचार्यश्री महाश्रमण जी जैसे महान संत के दर्शन करने और प्रवचन सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जब भाग्य प्रबल होते हैं तो ऐसे महान संतों के चरणरज पड़ते हैं।

संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

व्यक्ति को भोग से योग की ओर...

(पृष्ठ १२ का शेष)

साध्वी धनश्री जी, साध्वी संयमयशा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने अणुव्रत गौरव-२०२१ के लिए निर्मल रांका का नाम घोषित किया। धीसूलाल नाहर को अणुव्रत गौरव-२०२० से सम्मानित किया गया। तमीशा लोढ़ा, पूर्वा-साक्षी बांठिया, हर्षिता दुगड़, हितेश भांडिया (मंत्री-अणुविभा) पन्नालाल पुगलिया (मंत्री-जेएसटीएस) जेएसटीएस अध्यक्ष नरेश मेहता, छपर के व्यवस्था समिति अध्यक्ष माणकचंद नाहटा ने अपनी भावनाएँ श्रीचरणों में अर्पित की। अशोक बाफना ने अपनी एक कृति 'Relative Economics' श्रीचरणों में अर्पित की।

पूज्यप्रवर ने इस पुस्तक के बारे में फरमाया कि परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी भी अर्थशास्त्र के संदर्भ में फरमाते थे। ये पुस्तक जो आई है, अशोक बाफना इससे जुड़े हैं। ये पुस्तक पाठक को एक अच्छी गाईडेंस देने वाली सिद्ध हो, मंगलकामना।

विश्रुत जैन ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने मुनि कुमार श्रमण जी के संसारपक्षीय माताजी सूरजबाई की दीक्षा लाडनू में फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि जो अशुभ लेश्या में मृत्यु को प्राप्त करता है, वो अशुभ गति में जन्म लेता है।

व्यक्ति को भोग से योग की ओर बढ़ना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण



अणुविभा, जयपुर, २७ दिसंबर, २०२१

अणुविभा में पूज्यप्रवर का तीसरे दिन का प्रवास। तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि तीन शब्द हैं—भोग, रोग, योग। सांसारिक-सामान्य आदमी भोग के प्रति आकर्षित हो जाता है। पंचेंद्रियों के पाँच विषय हैं। पाँचों के अपने-अपने काम हैं। इन इंद्रिय विषयों के द्वारा आदमी भोग भोगता है।

योग के भी दो प्रकार हैं—काम और भोग। श्रोत और चक्षु से होने वाला भोग काम कहलाता है। शेष तीन इंद्रियों से होने वाला भोग कहलाता है। काम का साक्षात् आसेवन नहीं देता। भोग का साक्षात् आसेवन होता है। संक्षेप में पाँचों ही भोग है।

शास्त्रकार कहते हैं कि ये जो भोग है, जिनके प्रति आदमी की आसक्ति भी होती

है, उसमें जो रसासक्त होकर इनका सेवन करता है, वो कर्मों से बंध जाता है। जैसे मक्खी श्लेष्म में पड़कर चिपक जाती है। आदमी सोचता है कि मैंने भोगों को क्या भोगा, भोगों ने मुझे भोग लिया। पहले आदमी नशा करता है, फिर नशा आदमी को खाने लग जाता है। यह एक वृत्तांत से समझाया कि शराब को मैं मिट्टी में नहीं मिलाता तो पीने से शराब मेरे दिमाग को मिट्टी में मिला देती है।

अणुव्रत में जो कंट्रोल की बात है, वो भोग पर कंट्रोल की बात है उसमें नशामुक्ति, नैतिकता और संयम की बात है, जो आदमी के जीवन को निर्मल बनाने वाली है। भोग है, तो रोग को भी निमंत्रण मिल सकता है। भोग रोग का निमित्त बन सकता है। भोग से आत्मा के रोग भी हो सकते हैं। आत्मा को रोगमुक्त बनाना परम बात होती है।

अभी हम जयपुर के अणुविभा के

भवन में हैं। यह आचार्य महाप्रज्ञ जी से भी जुड़ा है। जयाचार्य भी जयपुर से जुड़े हैं। वे आचार्य भिक्षु के भाष्यकार थे। आचार्य महाप्रज्ञ जी का पांडित्य भी विशेष था। गला उनका मधुर था श्रद्धेय माणकगणी से भी जुड़ा शहर है। श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री का भी अंतिम प्रवास स्थल रहा है। ये संत पुरुष हैं, इन्होंने भोग से योग की ओर प्रस्थान किया था। हम भी भोग से योग की ओर आगे बढ़ें।

गृहस्थ में भी योग की साधना की जा सकती है। जप-स्वाध्याय आदि योग है। हम इसकी जितनी साधना करेंगे, निर्जरा होगी। मोक्ष का जो उपाय ज्ञान-दर्शन, चारित्र्य है, वो सब योग है। आत्मा को मोक्ष से जोड़ने वाला योग होता है। हम जितना योग में रहेंगे, आत्मा के निकट रह सकेंगे। संयम, तप, जप की साधना करते रहें। योग साधना आगे बढ़ती रहे। आदमी को निवृत्ति की ओर मोड़ लेना चाहिए। संयम युक्त जीवन बने। सभी श्रावक व संस्थाएँ धार्मिक, आध्यात्मिक कार्य करती रहें। अनेक गतिविधियों का केंद्र अणुविभा है। साध्वीप्रमुखश्री जी को भी यहाँ विराजने का, स्वास्थ्य लाभ लेने के लिए कहा है। जयपुर समाज में अच्छी धार्मिक भावना बनी रहे। परस्पर सहयोग का भाव रहे। गौरवपूर्ण गरिमा के अनुसार अच्छा करते रहें। सेवा-सामायिक साधना करते रहें। हम भोग से योग की दिशा में बढ़ते रहें, यह काम्य है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी का देवलोकगमन गदग।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी का चौविहार संथारे में कर्नाटक राज्य के गदग शहर में २४ दिसंबर, २०२१ को देवलोकगमन हो गया। साध्वीश्री का जन्म आषाढ़ शुक्ल एकम विक्रम संवत् १९८८ शहादा में हुआ। इनके माता-पिता का नाम सिरिकंवरबाई एवं श्रद्धा निष्ठ श्रावक देवकरणजी गेलड़ा है। इनकी शादी शहादा निवासी रतनलालजी संचेती से हुई। साध्वी पद्मावती जी की दीक्षा आचार्य तुलसी के निर्देश से साध्वी भत्तुजी द्वारा कार्तिक कृष्ण सप्तमी विक्रम संवत् २००७ को धुलिया में हुई। आप साध्वी भत्तुजी के साथ ३२ वर्ष एवं साध्वी नगीना जी के साथ ३६ बरस रहीं। १७ जुलाई, २०१७ को आपको अग्रगण्य बनाया गया एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आपको 'शासनश्री' अलंकरण प्रदान किया। आप मराठी, हिंदी, पंजाबी, बंगाली, गुजराती भाषा की जानकार थीं। इसके अलावा अंग्रेजी, प्राकृत, संस्कृत का भी सामान्य ज्ञान था।



आपने राजस्थान, बंगाल, बिहार, असम, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड, पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश की लगभग ६०,००० किलोमीटर की पदयात्रा की। प्रतिदिन चौबीसी, आराधना, अष्टकम, आचार बोध, संस्कार बोध, भक्तामर, कल्याण मंदिर, कर्तव्य षट्त्रिंशिका, शिक्षा षण्णवति, संघ षट्त्रिंशिका, आलंबन सूत्र पंचसूत्रम्, सिंदूर प्रकरणम्, शांत सुधारस भावना, बड़नगर से प्रकाशित थोकड़ा की लगभग पुस्तक कंठस्थ थी। इसके अतिरिक्त सिलाई, रंगाई, छंटाई एवं पुस्तक बाँधने की कला में आपकी दक्षता थी। प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक ३०४६ उपवास, पंद्रह बेला, चालीस तेला के अतिरिक्त अनेक तपस्याएँ की हैं।

तप साधना में आप चातुर्मास में प्रायः एक बार दस प्रत्याख्यान, श्रावन-भाद्रव-एकांतर तप, महीने में ४ उपवास नियमित करते। प्रतिदिन ३ घंटा जप, दीपावली, होली, दशहरा, पौष-दशमी आदि को विशिष्ट तपयुक्त अनुष्ठान करते और प्रतिदिन तीन घंटे मौन की अवस्था में रहते। पूरी आगम बत्तीसी का परायण, प्रतिदिन ५०० गाथाओं का स्वाध्याय आपकी प्रमुख साधना का क्रम था।

आपकी सेवा में सहवर्तिनी साध्वियों में साध्वी गवेषणाजी, साध्वी मेरुप्रभा जी, साध्वी मयंकप्रभा जी साथ ही साध्वी दक्षप्रभा जी का अच्छा सहयोग मिला। तेरापंथ धर्मसंघ में आपके न्यातिजनों में मुनि प्रबोध कुमार जी, शासनश्री साध्वी जिनप्रभा जी, साध्वी संवर विभाजी, साध्वी मयंकप्रभा जी साध्वी मृदुप्रभा जी, साध्वी आत्मयशा जी दीक्षित हैं।

१२ दिसंबर, २०२१ को गदग में चौविहार अनशन प्रारंभ किया और २२ दिसंबर, २०२१ को प्रातः १०:०८ पर तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान किया। दोपहर ११:५५ पर चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान किया। २४ दिसंबर को प्रातः ६:०६ पर देवलोकगमन हो गया।

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

